मान मन्दिर बरसाना

मासिक पत्रिका 'मार्गशीर्ष-पौष' वि.सं. २०८१ (दिसम्बर २०२४ ई.), श्रीकृष्ण सं.५२५०, वर्ष ०८, अंक १२

ब्रजयात्रा विशेषांक

वृन्दा कुण्ड
500 मी.

०२

अनुक्रमणिका

	विषय- सूची	पृष्ठ- संख्या
१	ब्रज-वसुन्धरा के सूर्य 'बाबाश्री'	०५
२	श्रीमानबिहारी-पाटोत्सव का रहस्य	०७
३	श्रीगह्वरवाटिका के अनुपम सुमन	०८
४	'श्रीब्रज-संस्कृति' का संरक्षण	११
५	'ब्रज के कुण्डों' का जीर्णोद्धार	१६
६	'देवसरोवर' का चमत्कारिक प्राकट्य	१८
७	'पीली पोखर' की सफाई	१९
८	'श्रीआराधन-शक्ति' से संगठन सहज	२१
९	'ब्रज-सीमान्त क्षेत्र' की सुरक्षा	२३
१०	'रासवन' की खोज	२६
११	'ब्रजलीला-साहित्य' का प्रकाशन	२७
१२	मंगलमूल-प्रेरणा-प्रदायक 'बाबाश्री'	२९
१३	श्रीकृष्णप्रेम की परिधि 'ब्रह्मचारिणी बालिकाएँ'	३३

INSTAAL करें --- PLAY STORE से-----

MAANINI APP

बाबाश्री के सत्संग/कीर्तन/भजन, साहित्य, आदि यहाँ से FREE - DOWNLOAD कर सकते हैं व सुन सकते हैं।

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप प्रातःकालीन सत्संग का ८.०० से ९:०० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ८:०० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं।

।। राधे किशोरी दया करो ।।
हमसे दीन न कोई जग में,
बान दया की तनक ढरो ।
सदा ढरी दीनन पै श्यामा,
यह विश्वास जो मनहि खरो ।
विषम विषयविष ज्वालमाल में,
विविध ताप तापनि जु जरो ।
दीनन हित अवतरी जगत में,
दीनपालिनी हिय विचरो ।
दास तुम्हारो आस और की,
हरो विमुख गति को झगरो ।
कबहूँ तो करुणा करोगी श्यामा,
यही आस ते द्वार पर्‌यो ।

परम पूज्यश्री रमेश बाबा महाराज जी द्वारा सम्पूर्ण भारत को आह्वान –

"मजदूर से राष्ट्रपति और झोंपड़ी से महल तक रहने वाला प्रत्येक भारतवासी विश्वकल्याण के लिए गौ-सेवा-यज्ञ में भाग ले।"

*** योजना ***

अपनी आय से १ रुपया प्रति व्यक्ति प्रतिदिन निकालें व मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक रूप से इकट्ठा किया हुआ सेवाद्रव्य किसी विश्वसनीय गौसेवा प्रकल्प को दान कर गौरक्षा कार्य में सहभागी बन अनन्त पुण्य का लाभ लें। हिन्दूशास्त्रों में अंशमात्र गौसेवा की भी बड़ी महिमा का वर्णन किया गया है।

संरक्षक- **श्रीराधामानबिहारीलाल**, प्रकाशक – **राधाकान्त शास्त्री, मानमंदिर, गह्वरवन, बरसाना, मथुरा** (उ.प्र.)

mob. **राधाकांत शास्त्री** .....9927338666, Website :www.maanmandir.org, (E-mail :info@maanmandir.org)

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें। हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है – **सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ। जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि ।।** (श्रीमद्भागवत३/७/४१)
अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुड़ाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंश के बराबर भी नहीं हो सकता।

प्रकाशकीय

तर्कोऽप्रतिष्ठः श्रुतयो विभिन्ना, नासावृषिर्यस्यमतं न भिन्नम् ।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां, महाजनो येन गतः स पन्थाः ॥ (महाभारत, वन पर्व ३/१३/११७)

न श्रुतियों के मत में एकता है और न स्मृतियों के मत में । मुनियों के मत में भी ऐक्य कहाँ ? धर्म का तत्व तो गुफा में ही छिपा हुआ है । तब कैसे ढूँढें ? कहाँ जाएँ ? क्या करें ? व्यथित होने की आवश्यकता नहीं, ये महापुरुष जिस मार्ग का सृजन करते हुए गये हैं, 'न स्खलेन्न पतेदिह' – आरूढ़ हो जाओ उस मार्ग पर, जहाँ न स्खलन का भय है, न पतन का ही; फिर हम जैसे भ्रान्त-परिश्रान्त पथिकों के लिए इन 'संत-महापुरुषों' का देदीप्यमान 'जीवन-चरित्र' ही तो निर्भ्रान्त पथ-प्रदर्शक है । धन्य तो है इस वसुन्धरा का पवित्र अंचल जो सदा से संत- परम्परा से विभूषित होता रहा है । महाकवि भवभूति ने कहा था –

'उत्पत्स्यते तु मम कोऽपि समानधर्मा । कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥'

कोई तो आगे भविष्य में ऐसा संत-महापुरुष-भावुक भक्त अवश्य ही उत्पन्न होगा, जो मेरी सद्भावनाओं को अच्छी तरह से समझकर संसार में प्रचार-प्रसार करेगा; ऐसा उनका भक्तिमय भावों से सम्बन्धित सद्ग्रन्थ-लेखन के प्रति सुदृढ़ विश्वास था ।

सनातन धर्म की ऐसी परम पावन परम्परा में, संसार प्रवास की स्वल्पावधि में विपुल लोकोपकार करने वाले परम पूज्य 'श्रीरमेशबाबाजीमहाराज' का अवतरण भी किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति हेतु ही हुआ है । जन्मभूमि (प्रयागराज) से ब्रजभूमि में अल्पायु (किशोरावस्था) में ही आप (बाबाश्री) का पदार्पण हुआ, मानो सुदीर्घ समय से ये परम प्रेमोदार भूमि आपके लिए प्रतीक्षित थी । प्रियतम के प्राकट्य स्थल 'ब्रजमण्डल' में प्रवेश करते ही प्राणों में अनन्तानन्द सिन्धु उच्छलित हुआ – अ हा हा ! दिव्य है यह भूमि !! अद्भुत है यहाँ रस का अखण्ड प्रवाह !!! यहाँ का चराचर रस का मूर्त रूप है !!!! रस वैभव सम्पन्न इस धाम का दर्शन कर उसी क्षण मन अपने संकल्प के लिए दृढ़ हो गया । बस फिर क्या था, श्रीजी के अन्तरंग परिकर, ब्रजरसरसिक 'पूज्य बाबा श्रीप्रियाशरणजीमहाराज' का सानिध्य प्राप्त कर 'अखण्ड ब्रजवास' जीवन का व्रत हो गया । ब्रज का संरक्षण-संवर्द्धन करते हुए सम्पूर्ण जीवन ब्रजसेवार्थ समर्पित करने वाले इन महापुरुष का तपोमय जीवन भक्तिपथ के पथिकों के लिए अनुकरणीय बन गया । 'गंगा की भाँति निर्मल, हिमांचल की भाँति अचल, भास्कर की भाँति तेजस्वी, शिशु-सी सरलता, जल-सी तरलता, वृक्ष-सी सहिष्णुता' – गीता का सही प्रतिनिधित्व करने लगा यह व्यक्तित्व । महाभाग्यवान हैं वे जन, जिन्होंने आपका साक्षात्कार किया है, कर रहे हैं और करेंगे । ब्रज-संस्कृति के एकमात्र संरक्षक, प्रवर्द्धक, उद्धारक, उच्च कोटि के गायक, 'संगीत व संस्कृत' के गूढ़ ज्ञाता एवं श्रीजी के परम कृपापात्र 'श्रीबाबामहाराज' विभिन्न वैष्णव सम्प्रदायों के भक्ति रहस्यों का सरल भाषा में विवेचन, महापुरुषों के पदों एवं भक्तों के चरित्रों का गायन प्रतिदिन 'त्रैकालिक सत्संग' द्वारा गत ६० वर्षों से जनमानस को सुलभतापूर्वक उपलब्ध कराते आ रहे हैं । बाबाश्री की अन्तरंग स्थिति का अनुमान उनके द्वारा पदों की रचनाओं में तथा गायन से उद्बोधित होता है । बाबाश्री के गाये पदों को सुनने मात्र से ही अनेक जीवों में आमूल परिवर्तन होते देखा गया जो जीवनपर्यन्त साधनाओं द्वारा भी सम्भव नहीं – महापुरुषों के सत्संग का प्रभाव ही ऐसा है ।

बाबाश्री की ब्रज-सेवाराधना से सम्बन्धित कुछ भावांशों का वर्णन प्रस्तुत पत्रिका में किया गया है, जिसे श्रद्धापूर्वक पढ़ने-सुनने से अवश्य ही ब्रजप्रेम-निष्ठा उत्पन्न होगी तथा श्रीराधामाधव की रसमयी भक्ति का सहज संपोषण होगा ।

कार्यकारी अध्यक्ष

राधाकान्त शास्त्री
श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

ब्रज-वसुन्धरा के सूर्य 'बाबाश्री'

ब्रजयात्रा की समाप्ति का दिन एक बड़ा ही करुण दृश्य भी उपस्थित करता है क्योंकि हजारों यात्री जो एक महीने से भी अधिक अवधि तक ब्रजवास करते हुए ब्रज के लीलास्थलों का दर्शन करते रहे, अब यहाँ से जाते समय वे आँखों में आँसू भरकर, एक-दूसरे से गले मिलकर फूट-फूटकर रोते हैं । ब्रजभूमि, ब्रजवासियों, श्रीराधामानबिहारी तथा श्रीबाबामहाराज का वियोग उनके हृदय को झकझोर कर रख देता है । श्रीबाबामहाराज के द्वारा सन् १९८८ से चलाई गई इस 'ब्रजयात्रा' की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह पूर्णतया निःशुल्क है और इसमें चौबीसों घंटे रसमय संकीर्तन होता है, नृत्य-आराधना होती है, जिसके कारण पूरी यात्रा में हर समय सरसता का वातावरण बना रहता है । इस ब्रजयात्रा के ही माध्यम से ब्रज के हजारों गाँवों में प्रभात फेरियाँ चलने लगीं और ब्रज की लुप्त हो रही संस्कृति का संरक्षण हुआ, साथ ही ब्रज की लीला स्थलियों यथा ब्रज के पर्वत, वन और कुण्डों का भी चमत्कारिक रूप से संरक्षण हुआ । ब्रजभूमि, ब्रजवासियों एवं ब्रजभक्तों की सेवा और इनके माध्यम से विश्व-कल्याण ही 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा' का प्रमुख उद्देश्य है । ब्रजयात्रा के कुछ समय पश्चात् **श्रीराधामानबिहारीलाल का पाटोत्सव 'मार्गशीर्ष शुक्ल त्रयोदशी' को मनाया जाता है ।** यह पाटोत्सव भी राधामानबिहारी लाल की रहस्यात्मक लीला से जुड़ा हुआ है । सन् २००६ की ब्रजयात्रा (१३ नवम्बर २००६ को यात्रा पूर्ण हुई थी) के तीन दिन बाद बंगाल का एक नवयुवक श्रीराधामानबिहारीलाल को मानमन्दिर से चुराकर बंगला देश की सीमा के निकट स्थित अपने गाँव में ले गया था । बंगाल के भक्त प्रतिवर्ष राधारानी ब्रजयात्रा में सबसे अधिक संख्या में अत्यधिक श्रद्धा व उत्साह के साथ सम्मिलित होते हैं । ऐसा ही प्रतीत होता है कि उन्हीं की भाव भक्ति, उनके प्रेम के कारण तथा बंगाल के अन्य प्रेमी भक्तों पर कृपा करने के लिए अखण्ड ब्रजवास करने वाले मानमन्दिर के ये श्रीयुगलकिशोर अपना नियम तोड़कर बंग प्रदेश को चले गये थे किन्तु ब्रजवासियों एवं मानमन्दिर के भक्तों के विरह का शमन करने तथा श्रीबाबामहाराज के अनन्य प्रेम के कारण ये थोड़े ही दिनों के भीतर बड़े ही चमत्कारिक ढंग से पुनः मानमन्दिर लौट आये । राधामानबिहारीलाल के बंगाल से वापस मान मन्दिर, बरसाना लौटने की परम आह्लादकारी, ऐतिहासिक घटना की स्मृति में ही प्रतिवर्ष लगभग दिसम्बर महीने के आसपास इनका पाटोत्सव बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता है, इस बार १३ दिसम्बर २०२४ को मनाया जाएगा । इस परम पुनीत अवसर पर श्रीजी मन्दिर, बरसाना के गोस्वामीगण एवं नन्दगाँव के नन्दलाला के मन्दिर के गोस्वामीगण मानमन्दिर में बड़े ही प्रेम से पखावज की ताल के साथ श्रीराधामाधव का यशगान करते हैं, जिसे 'समाज-गायन' कहा जाता है । श्रीमानबिहारीलालजी को बंगाल से ब्रज वापस लाने में नन्दगाँव के श्रीसुशील गोस्वामीजी ने बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी । उनके श्रीबाबामहाराज और श्रीराधामानबिहारीलाल के प्रति अनन्य प्रेम ने सुदूर बंगला देश की सीमा पर ले जाए गये ठाकुरजी को थोड़े ही समय में बरसाना आने को विवश कर दिया । इसके बाद **पौष मास के कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि को श्रीबाबामहाराज का जन्म दिवस मनाया जाता है ।** तीर्थराज प्रयाग में इसी परम मंगलमय अवसर पर सन् १९३८ में श्रीबाबा का आविर्भाव हुआ था। श्रीबाबामहाराज की महिमा अनन्त है, अनन्तश्रीयुत श्रीबाबामहाराज के अनन्त गुणों का शब्दों में वर्णन करना असम्भव है फिर भी उनके दिव्य प्राकट्य दिवस के उपलक्ष्य में कुछ उनके बारे में तो अवश्य ही वर्णन करना चाहिए । श्रीबाबामहाराज १७ वर्ष की अल्पावस्था में ही अपनी माताजी और अपनी जन्मभूमि का सदा के लिए परित्याग करके ब्रजभूमि में चले आये । वे तो वास्तव में श्रीराधारानी की सेवा में समर्पित अन्तरंग सहचरी ही हैं, जो श्रीजी की आज्ञा से भवसागर की अथाह गहराई में डूब रहे कलियुगी जीवों को विषम विषय विष की भीषण ज्वालाओं से बचाने और उन्हें राधामाधव की शरण में, उनके दिव्यातिदिव्य लीला धाम में पहुँचाने के लिए अवतरित हुए हैं । श्रीबाबामहाराज की कृपा से प्रतिवर्ष कार्तिक मास में भारतवर्ष के हजारों श्रद्धालुजन ब्रज चौरासी कोस की निःशुल्क परिक्रमा करके बड़ी ही आसानी से चौरासी लाख योनियों के भयानक बन्धन से मुक्त हो जाते हैं और श्रीजी के नित्य धाम में जाने के योग्य बन जाते हैं । बरसाना में श्रीजी के मानभवन, उनके मानकुञ्ज में लगभग

सत्तर वर्षों से अखण्डवास कर रहे श्रीबाबामहाराज श्रीराधारानी के ही स्वरूप हैं, श्रीराधारानी की अहैतुकी करुणा-दया को वे निरन्तर अपने दोनों हाथों से संसार की विविध ज्वालाओं में संतप्त जीवों पर लुटा रहे हैं । उनका द्वार बारहों महीने, चौबीस घण्टे सतत् खुला रहता है, जैसा कि उन्होंने स्वयं अपनी एक रचना में गाया है –

दीनबन्धु का द्वार खुला है, आना हो सो आवे ।
अभयदान का दान बँट रहा, लेना हो ले जावे ॥

श्रीबाबामहाराज भवाटवी में भटकते हुए काल के भय से त्रस्त संसार के जीवों को अभयदान का दान कर रहे हैं । सभी को राधारानी की रसमयी उपासना सिखा रहे हैं । मानमन्दिर के आराधना-भवन 'रस मण्डप' में उनके द्वारा प्रतिदिन श्रीजी की संकीर्तन-आराधना होती है, जिसमें मानमन्दिर की सौ से अधिक आराधिकाएँ गान और नृत्य के माध्यम से श्रीराधामाधव की अलौकिक उपासना करती हैं । ब्रजरस की वर्षा करने वाली लोकातीत सरस आराधना तो केवल श्रीबाबामहाराज के ही द्वारा बरसाना में, श्रीजी के करकमलों से निर्मित गह्वरवन में होती है । सभी को इसका लाभ उठाना चाहिए, सोशल मीडिया के माध्यम से, यू-ट्यूब के माध्यम से भी प्रतिदिन लोगों को श्रीजी के दिव्य निकुंज से प्रकट हुई इस रसोपासना का साक्षात्कार करना चाहिए । इसके अतिरिक्त श्रीबाबा के जो पुराने सत्संग हैं, उनका अनमोल खजाना भी 'मानिनी ऐप' तथा अन्य मान मन्दिर की वेबसाईट पर उपलब्ध हैं । देश-विदेश के सभी कल्याण के इच्छुक श्रद्धालुओं को उसका लाभ उठाना चाहिए क्योंकि श्रीबाबामहाराज की दिव्य वाणी, उनका सत्संग जीव के हृदय में अनादिकाल से जमी हुई गन्दगी को दूरकर (अन्तःकरण का शोधन कर) उसे श्रीराधामाधव की निष्काम रसमयी भक्ति प्रदान करने वाला है । श्रीबाबामहाराज के द्वारा गाये हुए पदगान, जिनमें सूरदासजी, तुलसीदासजी एवं मीराजी के दैन्य युक्त पद तथा स्वयं श्रीबाबा के द्वारा स्वरचित पद भी हैं, उनका विशाल संग्रह भी उपलब्ध है और यह सब पूर्णतया निःशुल्क है, सभी को इसका लाभ उठाना चाहिए । श्रीबाबा का सत्संग अद्वितीय है, उसकी किसी के साथ तुलना ही नहीं की जा सकती है । भारतवर्ष व ब्रजमण्डल में अनेकों संतजन-व्यासाचार्य-उपदेष्टा नित्य ही प्रवचन-व्याख्यान आदि देते रहते हैं, अन्य भी कई दिवंगत विशिष्ट सन्तों के वाचिक और लिखित उपदेश उपलब्ध हैं किन्तु कोई बुद्धिमान जिज्ञासु यदि श्रद्धा के साथ श्रीबाबामहाराज के त्रैकालिक सत्संग-पदगान को सुने और गहराई के साथ उसका आत्मचिन्तन-मनन करे तो स्वयं ही पता लग जाएगा कि श्रीबाबा की वाणी किस प्रकार सबसे अधिक प्रभावशाली और सर्वाधिक महत्वपूर्ण है ।

श्रीबाबामहाराज के द्वारा स्थापित 'श्रीमाताजी गौशाला' में ६५ हजार से अधिक गौवंश का पालन-पोषण हो रहा है, जो बाबाश्री की निष्काम आराधन-शक्ति से सतत् संवर्द्धित हो रही है । यह भारतवर्ष की सबसे बड़ी गौशाला है, जहाँ कसाईखानों से छुडाये गये, बीमार, उपेक्षित, वृद्ध और असहाय गौवंश की निष्काम भाव से सेवा होती है । इस गौशाला के माध्यम से श्रीबाबामहाराज ने भारत के लोगों को गौवंश की निःस्वार्थ सेवा का मार्ग दिखाया है । श्रीबाबामहाराज के द्वारा ऐसे-ऐसे विलक्षण कार्य किये गये हैं, जो अन्यों की तो कल्पना-शक्ति के भी परे हैं, तभी तो भारत सरकार ने भी उन्हें पद्मश्री के प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया किन्तु बाबाश्री के तो सम्पूर्ण सेवाकार्य सरकारों की सरकार (सबसे बड़ी सरकार) श्रीराधामाधवयुगलसरकार की प्रसन्नता के ही निमित्त होते हैं, उन्हें संसार के सम्मान-यश-प्रशंसा से लेशमात्र भी कोई प्रयोजन नहीं है । हम जैसे मायाबद्ध जीवों की माया से ग्रसित मन-बुद्धि पूज्यमहाराजश्री के स्वरूप को, उनकी अनन्त महिमा को समझने में पूर्णतया असमर्थ ही है, अतएव उन्हें केवल कोटि-कोटि वन्दन करते हुए यही याचना करते हैं कि आपके बताए हुए विशुद्ध भक्तिमय पथ पर सतत् सावधानीपूर्वक आगे बढ़ते रहें .....।

अध्यक्ष -

रामजीलालशास्त्री,

श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

श्रीमानबिहारी-पाटोत्सव का रहस्य

पाटोत्सव में बाबाश्री द्वारा कथित भाव (२३/१२/२०१५) से संकलित

हमारे मानमन्दिर में कभी भी 'पाटोत्सव' नहीं होता था । 'पाटोत्सव' उस कार्यक्रम को कहते हैं, जिस दिन ठाकुरजी मन्दिर में विराजते हैं । पचासों साल से हम मानमन्दिर में रह रहे थे लेकिन ठाकुरजी ने एक ऐसा खेल रचा कि यहाँ से चोरी चले गये । एक साधु मानमन्दिर में आया, वह बहुत सेवा करता था । सेवा के कारण वह सबका विश्वासपात्र बन गया था । उसी ने राधामानबिहारीलालजी की चोरी की । वह ठाकुरजी को इस तरह उठाकर ले गया कि किसी को पता ही नहीं चल पाया । वह उनको लेकर बंगला देश की सीमा पर चला गया, जहाँ उसका गाँव था । एक प्रकार से भारत से बाहर ले गया था । उसने सोचा कि जब ठाकुरजी भारत में ही नहीं रहेंगे तो किसी को उनकी प्राप्ति कैसे होगी ? मानमन्दिर के व्यवस्थापक राधाकान्तजी ने कहा कि ठाकुरजी के बिना मन्दिर सूना हो गया है, इसलिए यहाँ नये ठाकुरजी को विराजमान करना चाहिए । इनका कहना सही था क्योंकि श्रीविग्रह के बिना मन्दिर की कोई शोभा नहीं होती । हमने कहा कि नये ठाकुरजी को स्थापित करने की कोई आवश्यकता नहीं है । 'राधामानबिहारीलालजी' को ही यहाँ आना होगा और उन्हें आना चाहिए क्योंकि यहाँ जैसा आनन्द उनको दुनिया में कहीं भी नहीं मिलेगा । जब श्रीराधामानबिहारी 'ब्रजयात्रा' में चलते हैं तो संकीर्तन में इनके सामने हजारों भक्त नृत्य करते हैं । इसलिए मानगढ़ में इनको जिस आनन्द की प्राप्ति होती है, वैसा आनन्द अन्यत्र असम्भव है । बाद में इनकी खोजबीन की गयी तो पता चला कि ये बंगला देश की सीमा पर ले जाये गये हैं । नन्दगाँव के 'सुशील गोस्वामी' बंगाल गये, वहाँ बहुत से बंगाली भक्त मानमन्दिर के परिचय के थे क्योंकि वे यहाँ की ब्रजयात्रा में आ चुके थे । बंगाल में हल्ला मच गया कि ब्रज के ठाकुर मानबिहारीलालजी यहाँ आ गये हैं । बरसाना के 'राधामानबिहारीलाल' बंगाल में आये हैं तो उनका दर्शन करने के लिए सभी बंगाली भक्त दौड़ पड़े । इनका यश-सम्मान वहाँ इतना बढ़ गया कि हर मन्दिर में इनको ले जाया गया । सुशील गोस्वामी ने बताया कि हर जगह इनकी पधरावनी हुई । चोर के पास से ठाकुरजी मिलने के बाद जब बंगाल की पुलिस इन्हें थाने में ले आयी तो सभी बंगाली भक्त थाने में इनका दर्शन करने के लिए आने लगे क्योंकि ठाकुरजी आराधना से सिद्ध होते हैं । हमने तो कभी ठाकुरजी के श्रीविग्रह की आराधना नहीं की, न उनकी हम सेवा-पूजा करते हैं और न ही सेवा हम जानते हैं किन्तु जब से मानमन्दिर में कीर्तन प्रारम्भ हुआ, सैकड़ों ब्रजवासी उसमें नृत्य करते थे । यही आराधना है और इसी संकीर्तन-आराधना के कारण मानमन्दिर में चोर-डाकुओं का अड्डा नष्ट हुआ, यहाँ से सभी आसुरी शक्तियाँ पलायन कर गयीं, भूत-प्रेतों की बाधा समाप्त हो गई, अन्यथा मानगढ़ में चोर-डाकू, प्रेतात्माओं और सर्प-बिच्छू आदि के अनेक खतरे थे, यह ऐसा भयानक मन्दिर था कि भय के कारण दिन में भी कोई यहाँ नहीं आता था किन्तु बाद में यहाँ इतनी अधिक संकीर्तन की आराधना हुई कि इसी आराधना के कारण ही यहाँ के ठाकुर श्रीराधामानबिहारीलालजी जागृत हो गये और जागृत होने के बाद उन्होंने ऐसा चमत्कार दिखाया कि चोरी होने पर बंगला देश की सीमा से हवाई जहाज पर सवार होकर वापस यहाँ आये । मथुरा की कोर्ट में हम (बाबाश्री) को भी हस्ताक्षर करने जाना पड़ा क्योंकि मानमन्दिर में हम रहते हैं । पहली बार हमने मथुरा की कोर्ट को देखा, अदालत में गये और वहाँ हस्ताक्षर किया और फिर राधामानबिहारीलालजी को लेकर बरसाना आये । यहाँ आने पर यह विचार किया गया कि ठाकुरजी के बंगला देश से मानमन्दिर वापस आने की स्मृति में यहाँ उत्सव मनाया जाए, वह उत्सव धूमधाम से मनाया गया तो वही 'पाटोत्सव' बन गया । जबकि मानमन्दिर में पहले कभी पाटोत्सव नहीं होता था किन्तु ठाकुरजी ने यह चोरी लीला रच दी और तभी से यहाँ प्रतिवर्ष इनका 'पाटोत्सव' मनाया जाने लगा ।

महापुरुष बताते हैं कि जीव में चार शक्तियाँ होती हैं । एक तो सबसे छोटी शक्ति है निज शक्ति, जो संस्कार लेकर जीव आता है । दूसरी होती है माता-पिता की शक्ति, तीसरी शक्ति है गुरु की और चौथी इष्ट शक्ति होती है ।

श्रीमानविहारी-पाटोत्सव-रसिया

रसिया-तर्ज – "सबसौं सुन्दर है बरसानो, ब्रज में राधारानी कौ ।"

लीला रसमय है पाटोत्सव, राधामानविहारी कौ ॥
जिनकी लीला है अति अनुपम,
श्रीकरुणा से भरी है हरदम,
श्रद्धावान को अनुभव अनुपम,
प्रेम डोर में बँध के छाँड़ै, लाज-धरम जग कौ ।
एक बार श्रीलीला कीयौ,
प्रेम बंग-भक्तन कौ चीन्यौ,
आतुर ह्वै जाय दर्शन दीयौ,
भाववश्यता के कारण से नाम भयौ चोरी कौ ।
हल्ला मच्यौ ठाकुर भए गायब,
अचम्भौ अति लीला है अजब,
ढूँढन लगै इहाँ-वहाँ जब-कब,
खोज्यौ गाँव जिला प्रदेश में, मिल्यौ श्रेय ब्रजजन कौ ।
भैया सुशील नन्दगाँव निवासी,
श्रीठाकुर के प्रेम-खवासी,
कह्यौ बाबा सच्चे ब्रजवासी,
बंग-प्रदेश में मानबिहारी, जन-जन जानी कौ ।
बड़ी धूम से हुई बंग-यात्रा,
बनी फिर अद्भुत ब्रजयात्रा,
महोत्सवमय श्रीगहवरयात्रा,
वरष प्रति प्रारम्भ पाटोत्सव, राधामानविहारी कौ ॥

श्रीगह्वरवाटिका के अनुपम सुमन

तीर्थराज प्रयाग को जिन्होंने (बाबाश्री ने) जन्मभूमि बनने का सौभाग्य-दान दिया । माता-पिता के एकमात्र पुत्र होने से उनके विशेष वात्सल्यभाजन रहे । ईश्वरीययोजना ही मूल हेतु रही आपके अवतरण में । दिव्य दम्पति स्वनामधन्य श्रीबलदेवप्रसादशुक्ल ('शुक्ल भगवान्' जिन्हें लोग कहते थे) एवं श्रीमती हेमेश्वरी देवी को दीर्घकाल तक संतान-सुख अप्राप्य रहा, संतान-प्राप्ति की इच्छा से कोलकाता के समीप तारकेश्वर में जाकर आर्तपुकार की, परिणामतः सन् १९३० पौष मास की सप्तमी को रात्रि ९:२७ बजे कन्यारत्न श्रीतारकेश्वरी (दीदीजी) का अवतरण हुआ, अनन्तर दम्पत्ति को पुत्र-कामना ने व्यथित किया । पुत्र-प्राप्ति की इच्छा से कठिन यात्रा कर रामेश्वर पहुँचे, वहाँ जलान्न त्यागकर शिवाराधन में तल्लीन हो गये, पुत्र-कामेष्टि महायज्ञ किया । आशुतोष हैं रामेश्वर प्रभु, उस तीव्राराधन से प्रसन्न हो तृतीय रात्रि को माताजी को सर्वजगन्निवासावास होने का वर दिया । शिवाराधन से सन् १९३८ पौष मास कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि को अभिजित मुहूर्त मध्याह्न १२ बजे अद्भुत बालक का ललाट देखते ही पिता (विश्व के प्रख्यात व प्रकाण्ड ज्योतिषाचार्य) ने कह दिया – "यह बालक गृहस्थ ग्रहण न कर नैष्ठिक ब्रह्मचारी ही रहेगा, इसका प्रादुर्भाव जीव-जगत के निस्तार निमित्त ही हुआ है ।" वही हुआ, गुरु-शिष्य परिपाटी का निर्वाहन करते हुए शिक्षाध्ययन को तो गये किन्तु बहु अल्प काल में अध्ययन समापन भी हो गया । **"अलप काल विद्या सब आयी"** गुरुजनों को गुरु बनने का श्रेय ही देना था अपने अध्ययन से । सर्वक्षेत्र कुशल इस प्रतिभा ने अपने गायन-वादन आदि ललित कलाओं से विस्मयान्वित कर दिया बड़े-बड़े संगीतमार्तण्डों को । प्रयागराज को भी स्वल्पकाल ही यह सानिध्य सुलभ हो सका **"तीर्थी कुर्वन्ति तीर्थानि"** ऐसे अचिन्त्य शक्ति सम्पन्न असामान्य पुरुष का । अवतरणोद्देश्य की पूर्ति हेतु दो बार भागे जन्मभूमि छोड़कर ब्रजदेश की ओर किन्तु माँ की पकड़ अधिक मजबूत होने से सफल न हो सके । अब यह तृतीय प्रयास था, इन्द्रियातीत स्तर पर एक ऐसी प्रक्रिया सक्रिय हुई कि तृणतोडनवत् (तिनका तोड़ने के समान) एक झटके में सर्वत्याग कर पुनः गति अविराम हो गई ब्रज की ओर । चित्रकूट के निर्जन अरण्यों में प्राण-परवाह का परित्याग कर परिभ्रमण किया, सूर्यवंशमणि प्रभु श्रीराम का यह वनवास स्थल पूज्यपाद का भी वनवास स्थान रहा । **"स रक्षिता रक्षति यो हि गर्भे"** (जो प्रभु गर्भ के भीतर जीव की रक्षा करते हैं, वही बाहर भी रक्षा करते हैं ।) इस भावना से निर्भीक घूमे उन हिंसक जीवों के आतंक सम्भावित भयानक वनों में ।

आराध्य के दर्शन को तृषान्वित (प्यासे) नयन, उपास्य को पाने के लिए लालसान्वित हृदय अब बार-बार पादपद्मों को श्रीधाम 'बरसाने' के लिए ढकेलने लगा, बस पहुँच गए बरसाना । मार्ग में अन्तस् को झकझोर देने वाली अनेकानेक विलक्षण स्थितियों का सामना किया । मार्ग का असाधारण घटना संघटित वृत्त यद्यपि अत्यधिक रोचक, प्रेरक व पुष्कल है तथापि इस दिव्य जीवन की चर्चा स्वतन्त्र रूप से भिन्न ग्रन्थ के निर्माण में ही सम्भव है, अतः यहाँ तो संक्षिप्त चर्चा ही है । बरसाने में आकर तन-मन-नयन आध्यात्मिक मार्गदर्शक (श्रीइष्ट) के अन्वेषण में तत्पर हो गए । श्रीजी ने सहयोग किया एवं निरन्तर राधारससुधासिन्धु में अवस्थित, राधा के परिधान में सुरक्षित, गौरवर्णा की शुभ्रोज्ज्वल कान्ति से आलोकित-अलंकृत युगल सौख्य में आलोडित, नाना पुराणनिगमागम के ज्ञाता, महावाणी जैसे निगूढात्मक ग्रन्थ के प्राकट्यकर्ता "अनन्त श्री सम्पन्न "श्रीश्रीप्रियाशरणजीमहाराज" से शिष्यत्व स्वीकार किया ।

ब्रज में श्रीराधिका के जन्मस्थान बरसाना, बरसाने में श्रीजी की निज करकमलों से निर्मित गहवर-वाटिका **"बीस कोस वृन्दाविपिन पुर वृषभानु उदार, तामें गहवर वाटिका जामें नित्य विहार"** और उस गह्वरवन में भी महासदाशया मानिनी श्रीराधा का मन-भावन मान-स्थान 'श्रीमानमंदिर' ही मानद (बाबाश्री) को मनोनुकूल लगा । मानगढ़, ब्रह्माचलपर्वत की चार शिखरों में से एक महान शिखर है । उस समय तो यह बीहड़ स्थान दिन में भी अपनी विकरालता के कारण किसी को मंदिर प्रांगण में न आने देता । मंदिर का आंतरिक मूल स्थान चोरों को चोरी का माल छिपाने के लिए था । चौराग्रगण्य (श्रीकृष्ण) की उपासना में इन विभूति (बाबाश्री) को भला चोरों से क्या भय ? भय को भगाकर भावना की – **"तस्कराणां पतये नमः"** – चोरों के सरदार को प्रणाम है, पाप-पंक के चोर को भी एवं रकम-बैंक के चोर को भी । ब्रजवासी चोर भी पूज्य हैं हमारे, इस भावना से भावित हो द्रोहार्हणों (द्रोह के योग्य) को भी कभी द्रोहदृष्टि से न देखा, अद्वेष्टा के जीवन्त स्वरूप जो ठहरे । फिर तो शनैः-शनैः 'श्रीबाबामहाराज के संकीर्तन-आराधन' ने स्थल को जाग्रत कर दिया, अध्यात्म की दिव्य सुवास से परिव्याप्त कर दिया ।

जग-हित-निरत इस दिव्य जीवन ने असंख्यों को आत्मोन्नति के पथ पर आरूढ़ कर दिया एवं कर रहे हैं । श्रीचैतन्यमहाप्रभु के पश्चात् कलिमलदलनार्थ (कलियुग के दोषों को नष्ट करने के लिए) श्रीनामामृत की नदियाँ बहाने वाली एकमात्र विभूति (बाबाश्री) के सतत् प्रयास से आज ४० हजार से अधिक गाँवों में 'प्रभातफेरी' के माध्यम से हरिनाम-संकीर्तन गूँज (निनादित हो) रहा है । ब्रजभूमि के कृष्णलीला से सम्बन्धित दिव्य वन, सरोवर, पर्वतों को सुरक्षित करने के साथ-साथ सहस्त्रों वृक्ष लगाकर सुसज्जित भी किया । अधिक पुरानी बात नहीं है, आपको स्मरण करा दें, सन् २००९ में "राधारानी ब्रजयात्रा" के दौरान ब्रजयात्रियों को साथ लेकर स्वयं ही बैठ गये आमरण अनशन पर, इस संकल्प के साथ कि जब तक ब्रज के पर्वतों पर हो रहे खनन द्वारा आघात को सरकार रोक नहीं देगी, मुख में जल भी नहीं जायेगा । समस्त ब्रजयात्री भी निष्ठापूर्वक अनशन लिए हुए हरिनामसंकीर्तन करने लगे और उस समय जो उद्दाम गति से नृत्य-गान हुआ, श्रीभगवन्नाम के प्रति इस अटूट आस्था का ही परिणाम था कि १२ घंटे बाद ही विजयपत्र आ गया । दिव्य विभूति के अपूर्व तेज से साम्राज्य सत्ता भी झुक गयी । गौवंश के रक्षार्थ सन् २००७ में 'श्रीमाताजी गौशाला' का बीजारोपण किया था, देखते ही देखते आज उस वट बीज ने विशाल तरु का रूप ले लिया, जिसके आतपत्र (छाया) में आज ६५,००० से अधिक गायों का मातृवत् पालन हो रहा है । संग्रह-परिग्रह से सर्वथा परे रहने वाले इन महापुरुष की श्रीभगवान् का नाम ही एकमात्र सरस सम्पत्ति है ।

यही करुणा करना करुणामयी मम अंत होय बरसाने में ।
पावन गह्वरवन कुञ्ज निकट रज में रज होय मिलूँ ब्रज में ॥ (बाबाश्री कृत संरचना)

परम विरक्त होते हुए भी बड़े-बड़े कार्य संपादित किये इन ब्रज संस्कृति के एकमात्र संरक्षक, प्रवर्द्धक व उद्धारक ने । ब्रज में क्षेत्रसन्यास (ब्रज के बाहर न जाने का प्रण) लिया एवं इस सुदृढ़ भावना से विराज रहे हैं । ब्रज, ब्रजेश व ब्रजवासी ही आपका सर्वस्व हैं । असंख्य जन आपके सान्निध्य-सौभाग्य से सुरभित हुये, आपके विषय में जिनके विशेष अनुभव हैं,

विलक्षण अनुभूतियाँ हैं, विविध विचार हैं, विपुल भाव साम्राज्य है, विशद् अनुशीलन हैं, इस लोकोत्तर व्यक्तित्व ने विमुग्ध कर दिया है विवेकियों का हृदय । वस्तुतः श्रीकृष्णकृपा-प्राप्त व्यक्ति को ही सुगम हो सकता है यह व्यक्तित्व । रससिन्धु की जिस अगाध गहराई में आपका सहज प्रवेश है, यह अतिशयोक्ति नहीं कि रस ज्ञाताओं का हृदय भी उस तल से अछूता ही रह गया । 'आपकी आंतरिक स्थिति क्या है ?' यह बाहर की सहजता, सरलता को देखते हुए सर्वथा अगम्य है । आपका अन्तरंग लीलानंद, सुगुप्त भावोत्थान, युगल मिलन का आनन्द; इन गहन भाव-दशाओं का अनुमान आपके सृजित साहित्य के पठन से ही सम्भव है । आपकी अनुपम कृतियाँ – श्रीरसिया रसेश्वरी, स्वर वंशी के शब्द नूपुर के, ब्रजभावमालिका (बरसाना), भक्तद्वय चरित्र इत्यादि हृदय को द्रवित करने वाले भावों से भावित हैं । आपका त्रैकालिक सत्संग अनवरत चलता ही रहता है । साधक-साधु-सिद्ध सबके लिए सम्बल हैं आपके परम मंगलमय रस से भरे हुए वचन । सुदैन्य की भावनाओं से भावित अद्भुत असीम रस का साक्षात् स्वरूप है आपकी दिव्य रहनी, जो अनेकानेक पावन भक्तिरस के लोभी साधकों का आकर्षण-केन्द्र बन गयी, ऐसा महिमाशाली महान जीवन-चरित्र स्वाभाविक रूप से सभी को आश्चर्यचकित कर देने वाला है । आपकी कथनी-करनी-रहनी को देख-सुनकर सैकड़ों साधक-साधिकाओं ने घर-द्वार छोड़ दिए हैं और सदा के लिए आपके श्रीचरणकमलों में शरणागत हो गए हैं ।

रस-सिद्ध-संतों की परम्परा इस ब्रजभूमि पर कभी टूट नहीं पायी । श्रीजी की यह गह्वरवाटिका जो कभी पुष्पविहीन नहीं होती, शीत हो या ग्रीष्म, पतझड़ हो या वर्षा, एक न एक पुष्प तो आराध्य के आराधन हेतु खिला ही रहता है । आज भी इस अजर-अमर, सुन्दरतम, शुचितम, महत्तम, पुष्प (बाबाश्री) का संसार स्वस्तिवाचन (महिमागान) कर रहा है । आपके अनन्त उपकारों के लिए हमारा नित्य-निरन्तर वन्दन-नमन-प्रणाम व सतत् शरणागति भी न्यून (कम, नगण्य) है । प्रार्थना है अवतरित प्रीति-प्रतिमा विभूति (श्रीबाबामहाराज) से कि निज पादाम्बुजों का अनुगमन (अपने उपदेशों का पालन) करने की शक्ति हम सबको प्रदान करें । आपकी प्रेम प्रदायिका, परम पुनीता पद-रज-कणिका को पुनः-पुनः प्रणाम है ।

बाबाश्री-जन्ममहोत्सव-रसिया

रसिया तर्ज – जनम लियौ राधा ने, कीरति के बधाई आज ।

जनम लियौ बाबा ने, जन जन में बधाई आज ॥
धन्य मुदित हुए अति आनन्दित मात-पिता परिजन ।
परम प्रफुल्लित तीर्थराज भये, जामें करैं हैं वे मज्जन ॥
सरस प्रेम में डूबे बाबा शीघ्र पढ़े हैं पाठ-पठन ।
जब-जब ब्रज कौ विरह बढ़यौ है, छूट गये घर-जन ॥
इष्ट रूप श्रीब्रज में आयकै मिल्यौ है परमानन्द ।
पूरे ब्रज में भ्रमण कियौ है, बँधे हैं गहवर फन्द ॥
स्वरूप श्रीब्रज कौ याद आयौ करवायौ कीर्तन ।
ब्रजवासी सब नाचैं-गावैं, बरस्यौ रस जन-जन ॥
श्रीसत्संग-सरिता-अवगाहन हुए हैं निर्मल मन ।
शरणापन्न हुए आजीवन, रहै हैं गह्वर वन ॥
सखी-सहचरी रस प्रकट्यौ श्रीराधा-आराधन ।
अद्भुत आराधना भई है, जान्यौ श्रीरसिकन ॥
आराधिकायें नृत्य करत हैं जो स्वरूप श्रीजी कौ ।
सेवा सहज मूल आराधन, मन्त्र मन्दिर बनवे कौ ॥
अब तो जगह-जगह श्रीब्रजरस बरसैगो सहचरियन ।
निष्किञ्चन निष्काम हैं ये, श्रीबाबा की शरन ॥

ललित मोहिनी और ललित किशोरीजी दो भाई थे, वे नवाब कहे जाते थे; उनके पास इतनी अपार सम्पत्ति थी, जितनी किसी के पास नहीं थी किन्तु उन्होंने समस्त सम्पत्ति का त्याग कर दिया और वृन्दावन में आये । उन्होंने पहले से ही कह दिया था कि जब मेरी मृत्यु हो जाए तो मेरे मृतक शरीर को कन्धे पर न ले जाया जाए । मेरे शरीर को पाँव पकड़कर ब्रजरज में घसींटते हुए मृतक कुत्ते की तरह ले जाया जाए, जिससे कि ब्रजरज मेरे शरीर पर लगती रहे । उनकी मृत्यु होने पर उनके शिष्यों ने उनकी इस आज्ञा का पालन किया ।

'श्रीब्रज-संस्कृति' का संरक्षण

संत श्रीभामिनीशरणजी, मानमन्दिर के भावोद्गारों से संकलित

जिस समय ब्रज में पर्वतों का खनन तेजी से बढ़ता जा रहा था । खनन-माफिया ब्रज के पर्वतों को नष्ट करके बहुत बड़ा व्यापार करने में, धनोपार्जन करने में लगे हुए थे । सरकार को धन देने के कारण इनको प्रशासन से पर्वतों के विध्वंस की खुली छूट मिली हुई थी । इनके विरुद्ध बोलने का किसी में साहस नहीं था । ब्रज-वृन्दावन के सभी वैष्णव सम्प्रदाय, साधु समाज एवं भक्ति के प्रचारक लोग मूक दर्शक की तरह ब्रज के पर्वतों का विनाश देखते रहे, किसी ने भी इनके इस वीभत्स कार्य की निन्दा नहीं की, यहाँ तक कि जब श्रीबाबा महाराज ने पर्वतों के संरक्षण का आन्दोलन चलाया तो किसी ने भी इसमें सहयोग नहीं किया, अनेक साधु-सन्त तो इसे व्यर्थ का प्रपंच बताकर इससे अपना पल्ला झाड़ते रहे किन्तु श्रीबाबा ने केवल श्रीजी का आश्रय लेकर किसी से सहायता की अपेक्षा किये बिना ही ब्रज के पर्वतों के विध्वंसकों के विरुद्ध बहुत बड़ी अहिंसक लड़ाई छेड़ दी । एकबार भारत के एक बहुत बड़े पर्यावरणविद् 'श्रीसुन्दरलाल बहुगुणा' श्रीबाबामहाराज से मिलने मानमन्दिर पधारे और उन्हें ब्रज के पर्वतों के व्यापक खनन के बारे में पता चला तो उन्होंने बाबाश्री से अनुरोध किया कि इन पर्वतों को बचाने के लिए आप स्वयं ही किसी पर्वत पर धरना देकर बैठिये, तभी इन पर्वतों का संरक्षण हो सकेगा । उनके कहने पर श्रीबाबामहाराज सुनहरा और ऊँचा गाँव के मध्य में स्थित पर्वत श्रृंखला पर धरना देकर बैठे । श्रीबाबा दिन-रात पर्वत पर ही बैठे रहते । गर्मियों का मौसम था, पर्वत पर एक रावटी (तम्बू) लगा दी गयी, उसमें श्रीबाबा के साथ ही उनके अनुयायी ब्रजवासी और कुछ साधु रहा करते । श्रीबाबा की प्रेरणा से कीर्तन सदा होता रहता था । एक सन्त श्रीवीरबाबा डभारा से रात को भिक्षा माँगकर आधी रात को ही भिक्षा का प्रसाद श्रीबाबा को पवाने उस पहाड़ पर जाया करते थे । एक बार रात को मान मन्दिर के दो सन्त श्रीबाबा के पास पर्वत पर जा रहे थे तो उन्होंने जंगल में कुछ बदमाशों को देखा, जो अपने हाथों में बन्दूक लिए हुए थे । वे किसी से बात कर रहे थे और कह रहे थे कि आज की रात रमेश बाबा की अन्तिम रात है । जब इन सन्तों ने उन्हें देखा और उनकी बात सुनी तो वे समझ गये कि ये बदमाश तो श्रीबाबा की हत्या के प्रयास में यहाँ आये हुए हैं । ये सन्त भयभीत होकर श्रीबाबा के पास पर्वत पर पहुँचे और उन्हें बताया कि नीचे कुछ बदमाश आपको मारने के लिए बन्दूक लेकर खड़े हैं । अब श्रीबाबामहाराज की निर्भयता का ज्वलन्त उदाहरण देखिये कि अर्द्धरात्रि का समय, हत्यारे बन्दूक लेकर नीचे अपने कुत्सित लक्ष्य को लेकर तैयार खड़े हैं किन्तु श्रीबाबा ने मुस्कुराते हुए पूर्ण निर्भयता के साथ इन सन्तों से कहा कि चिन्ता मत करो, मैं ऐसी ही मृत्यु चाहता हूँ कि कोई मुझे गोली मार दे, मैं कायरों की तरह बिस्तर पर सड़कर मरना नहीं चाहता हूँ । श्रीराधारानी की कृपा से हत्यारे श्रीबाबा का बाल भी बाँका नहीं कर सके । पुलिस को सूचना दे दी गयी, पुलिस आ गयी और उसके आते ही सब बदमाश भाग गये । श्रीबाबामहाराज के द्वारा पर्वतों की रक्षा के लिए गाँव-गाँव में धरना आयोजित किया गया । उसमें मानमन्दिर के साधुओं को भी श्रीबाबा ने भेजा, मुझे (भामिनीशरण को) भी इस अभियान में जाने का सौभाग्य मिला । सबसे पहले सेऊ-घाटा गाँव में धरना आयोजित किया गया । इस धरने में श्रीबाबा की प्रेरणा से अखण्ड कीर्तन निरन्तर चलता रहता था । श्रीबाबामहाराज की यह विशेषता है कि धाम सेवा व अन्य कल्याणकारी कार्यों की सफलता हेतु वे सबसे पहले नाम-कीर्तन का आयोजन करते हैं । बिना भगवान् के नाम-कीर्तन के श्रीबाबा का कोई कार्य नहीं चलता है और यही श्रीमद्भागवत का भी निर्णय है कि कलियुग की समस्त समस्याओं का एकमात्र निदान भगवन्नाम कीर्तन ही है । इसीलिए ब्रज के दिव्य पर्वतों के संरक्षण के आन्दोलन में भी नाम कीर्तन का ही प्रमुख रूप से आश्रय लिया गया । कामां (कामवन) के निकट स्थित बोलखेड़ा और कलावटा गाँवों में भी श्रीबाबा महाराज की आज्ञानुसार मानमन्दिर के साधुओं की ओर से आमरण अनशन और धरना का आयोजन किया गया, जिसमें कीर्तन सतत चलता रहता था । कलावटा गाँव के धरना की वजह से वहाँ स्थित श्रीकृष्ण लीला की महत्त्वपूर्ण स्थलियाँ जैसे फिसलनी शिला और व्योमासुर की गुफा की सुरक्षा हो गयी, अन्यथा खनन माफिया इनको डायनामाइट के विस्फोट से पूर्ण रूप से नष्ट

कर देते । बोलखेड़ा गाँव में तो मान मन्दिर के दो साधुओं ने आमरण अनशन कर दिया था । एक सप्ताह से अधिक बीत जाने पर जब उनके स्वास्थ्य की दशा बहुत बिगड़ने लगी तो राजस्थान सरकार इतना घबरा गयी थी कि मान मन्दिर के ३० से अधिक साधुओं को वहाँ धरने से हटाने के लिए सरकार ने आधी रात को पुलिस की दर्जनों गाड़ियों को भेजा, पुलिस के आने पर गाँव के ब्रजवासी नाराज हो गये और उन्होंने पुलिस वालों से बहुत झगड़ा किया । किसी भी प्रकार पुलिस उस गाँव से साधुओं को अनशन और धरने से हटाने को तत्पर थी और अन्त में गाँव वालों के साथ भीषण संघर्ष, पथराव का सामना करते हुए भी पुलिस की दर्जनों गाड़ियाँ मानगढ़ के सन्तों को बोलखेड़ा गाँव से हटाकर भरतपुर पुलिस मुख्यालय में ले गयीं और वहाँ से एक बस के द्वारा उन्हें गह्वरवन में भेज दिया गया । इतना सब कुछ करने पर भी कुछ सन्तों को पुलिस नहीं हटा पायी थी और अगले दिन फिर से सभी सन्त श्रीबाबा महाराज की प्रेरणा से बोलखेड़ा गाँव पहुँच गये और धरना दुबारा प्रारम्भ कर दिया गया । श्रीबाबामहाराज ने सरकार के भीषण दबाव के समक्ष भी कभी समर्पण नहीं किया और पर्वतों की रक्षा के आन्दोलन में जी जान से जुटे रहे । अन्त में सन् २००९ की ब्रजयात्रा में तो श्रीबाबा ने स्वयं कामवन के अन्तिम पड़ाव स्थल पर आमरण अनशन किया । उनका यह संकल्प था कि जब तक ब्रज के पर्वतों का विनाश पूर्ण रूप से बन्द नहीं होगा, तब तक मैं अन्न-जल ग्रहण नहीं करूँगा, या तो पर्वतों का खनन पूरी तरह बन्द किया जाए, अन्यथा मैं अपनी जीवन लीला यहीं कामवन में समाप्त कर दूँगा । श्रीबाबामहाराज को अनशन करते देखकर हजारों ब्रजयात्री भी अनशन करने बैठ गये, यहाँ तक कि मान मन्दिर गुरुकुल के छोटे-छोटे बच्चों ने भी बाबा को अनशन करते देखकर संकल्प ले लिया कि जब तक श्रीबाबामहाराज अन्न-जल नहीं ग्रहण करेंगे, तब तक हम लोग भी जल की बूंद तक नहीं पियेंगे । श्रीबाबामहाराज के अनशन की सूचना मिलते ही राजस्थान सरकार के होश उड़ गये और आधी रात को १२ बजे तत्कालीन मुख्यमन्त्री ने श्रीबाबा को फोन करके कहा – 'महाराजजी ! आप अपना अनशन समाप्त कर दीजिये । डीग और कामां तहसील में जितना भी व्यापक खनन हो रहा है, आपकी इच्छानुसार उस पर पूर्ण रूप से प्रतिबन्ध लगा दिया जाएगा ।' मुख्यमन्त्री की बात सुनकर श्रीबाबा ने उनसे कहा कि मेरे साथ छोटे-छोटे बच्चे और हजारों यात्री भी अनशन पर बैठे हैं, इसी सूचना को उन्हें भी बताओ । श्रीबाबा की आज्ञा से फोन को माइक से जोड़ा गया और मुख्यमन्त्री ने सभी से अनशन समाप्त करने का अनुरोध किया और बताया कि पर्वतों का खनन अब सर्वदा के लिए समाप्त कर दिया जाएगा । मुख्यमन्त्री की इस घोषणा से आधी रात को पूरे यात्रा पाण्डाल में आनन्द की लहर दौड़ गयी, फिर आधी रात को सभी ने प्रसाद पाया और इस तरह श्रीबाबा महाराज की कृपा से शक्तिशाली खनन माफियाओं के विरुद्ध बहुत बड़ी ऐतिहासिक विजय प्राप्त हुई, जिन्हें धन के कारण सरकार का, प्रशासनिक अधिकारियों का पूर्ण संरक्षण प्राप्त था । ऐसा सरकारी कार्यों के इतिहास में प्रथम बार हुआ कि सरकारी दफ्तर आधी रात को खोले गये और रात के ही समय खनन के माफियाओं को उपलब्ध कराये गये समस्त खनन के पट्टे स्थायी रूप से निरस्त किये गये । इस तरह श्रीबाबा महाराज के अभूतपूर्व प्रयास से ब्रज के पर्वतों का संरक्षण हो गया ।

सन् २००७ में बरसाना में श्रीबाबा महाराज के द्वारा गौवंश की सेवा और उनके संरक्षण की दृष्टि से केवल चार-पाँच गायों के साथ माताजी गौशाला की स्थापना की गयी । उस समय श्रीबाबा ने गोशाला के प्रबन्धक श्रीब्रजशरणजी महाराज से कहा था कि यदि ईमानदारी और त्यागपूर्वक निष्काम भाव से गो सेवा की जाएगी तो यह भारतवर्ष की सबसे बड़ी गौशाला बन जायेगी । श्रीबाबामहाराज की आज्ञा का पूर्णरूपेण पालन करते हुए निष्काम भाव से बिना किसी से धन की याचना करते हुए गौसेवा की गयी तो आज वास्तव में यह भारत की सबसे बड़ी गौशाला बन गयी है । ६५ हजार से अधिक गोवंश का यहाँ पालन हो रहा है । श्रीबाबा का यह भी निर्देश था कि यहाँ कितनी भी गायें आयें, उनको रखा जाए, गाय के अतिरिक्त सांड़-बैल, बछड़ों को भी रखा जाए तो यहाँ प्रतिदिन ही कितनी ही अनाथ, रोगी, कसाईखानों से छुड़ायी गयी गायों को लाया जाता है और सभी की उत्कृष्ट सेवा की जाती है । बीमार गोवंश के लिए बहुत बढ़िया

वास्तव में सद्गुरु वे होते हैं जो केवल भगवद् भजन से ही सम्बन्ध रखते हैं । स्वयं भी और शिष्य के लिए भी चाहते हैं कि यह केवल भगवान का भजन करे ।

चिकित्सालय का भी निर्माण किया गया है, जहाँ सभी प्रकार के आधुनिक उपकरणों के साथ गायों का उपचार किया जाता है ।

हरिद्वार के कुम्भ के पूर्व वृन्दावन में एक छोटे कुम्भ मेले का आयोजन किया जाता है, इसमें ब्रजभूमि तथा भारत के बहुत से वैष्णव सम्प्रदाय एवं साधु-सन्त अपने शिविर लगाकर एक माह तक यमुना तट पर वास करते हैं । श्रीबाबा ने आज तक कभी भी वृन्दावन कुम्भ में मान मन्दिर की ओर से सहभागिता नहीं की थी । सन् २०१० में वृन्दावन में जब कुम्भ बैठक का आयोजन हुआ तो कई लोगों ने श्रीबाबा से अनुरोध किया कि इस बार मानमन्दिर का भी शिविर यहाँ लगाया जाए । श्रीबाबा ने प्रथम बार उस कुम्भ में इस उद्देश्य से सम्मिलित होना स्वीकार किया क्योंकि वृन्दावन में यमुनाजी बहुत अधिक दूषित हो गयी थीं । श्रीबाबा ने विचार किया कि वृन्दावन कुम्भ में तो सभी वैष्णव सम्प्रदाय और उनके आचार्य सम्मिलित होते हैं तो सबको साथ लेकर यमुनाजी को प्रदूषण से मुक्त करने का आन्दोलन चलाया जाए । इसी पावन उद्देश्य के साथ श्रीबाबा ने उस वर्ष वृन्दावन कुम्भ में पहली बार मान मन्दिर का शिविर लगवाया । सन् २०१० के कुम्भ में मान मन्दिर का पाण्डाल सर्वाधिक भव्य था । वहाँ सुबह और शाम श्रीबाबा का सत्संग होता था तथा रात को पद गान के साथ नृत्य आराधना की जाती थी । अखण्ड कीर्तन भी सदा होता रहता था । मान मन्दिर के शिविर में कुम्भ मेले में पधारे सभी वैष्णवों के लिए प्रतिदिन भण्डारे का भी प्रबन्ध किया गया था, जिसमें सभी लोग सुबह बालभोग एवं दोपहर तथा रात्रि को भोजन किया करते थे । मान मन्दिर के उस पाण्डाल में सभी के लिए रुकने, विश्राम करने का प्रबन्ध था । कुम्भ मेले में बीच-बीच में मुख्य पर्वों पर साधु समाज के द्वारा यमुनाजी में शाही स्नान का कार्यक्रम होता है । इस अवसर पर साधु समाज के विभिन्न अखाड़े और सम्प्रदाय अपने पूरे दल के साथ वैभव का प्रदर्शन करते हुए यमुना स्नान करने जाते हैं । शाही स्नान के एक दिन पूर्व साधु समाज के प्रतिनिधि श्रीबाबा महाराज को इस शाही स्नान का निमन्त्रण देने मान मन्दिर के पाण्डाल में आये । शाही स्नान में यह परम्परा होती है कि अपने-अपने दल के आचार्य या महन्त किसी वाहन पर बैठकर स्नान करने जाते हैं । कुछ सन्त हाथी पर, कुछ घोड़े पर और कुछ रथों पर आरुढ़ होकर चलते हैं । श्रीबाबा से पूछा गया कि आप कौन से वाहन पर बैठेंगे तो उन्होंने कहा कि अभी मेरा शरीर स्वस्थ है, मैं पैदल चलने में समर्थ हूँ, अतः मैं किसी वाहन पर नहीं बैठूँगा, मैं तो पैदल ही चलूँगा । अनन्तर श्रीबाबा से यह भी पूछा गया कि आप साधुओं के दलों में चलने का जो क्रम होता है, उसमें आगे चलेंगे या मध्य में चलना पसंद करेंगे तो श्रीबाबा ने बड़ी विनम्रता से कहा कि मैं तो सभी सन्तों-वैष्णवों के पीछे ही चलना पसंद करूँगा । पहले तो इन प्रतिनिधियों ने श्रीबाबा से यह कहा था कि आपके दल में तो बहुत सी लड़कियाँ भी हैं किन्तु शाही स्नान की यह मर्यादा है कि उसमें साधुओं के दल में महिलायें नहीं चलती हैं, इसलिए आप इसमें लड़कियों को सम्मिलित मत करियेगा । श्रीबाबा ने कहा – 'जैसी आपकी आज्ञा होगी, हम लोग वैसा ही करेंगे ।' रात की नृत्य आराधना में भी जब ये शाही स्नान हेतु निमन्त्रण देने वाले सन्त पधारे और इन्होने दो घन्टे तक मान मन्दिर की साध्वियों की नृत्य आराधना देखी तो ये बड़े ही प्रभावित हुए और श्रीबाबा से कहने लगे कि कल के शाही स्नान में आप इन साध्वियों को भी ले चलिए । श्रीबाबा ने समस्त साध्वियों को निर्देश दे दिया कि कल के शाही स्नान में तुम सबको भी चलना है । अब तो अगले दिन के शाही स्नान का सारा परिदृश्य ही बदल गया, कुम्भ मेले में आयोजित होने वाले साधु-सन्तों के शाही स्नान के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ कि सन्तों के दल के साथ सैकड़ों की संख्या में मान मन्दिर की साध्वियाँ भी गयीं । इस शाही स्नान में मान मन्दिर के सभी भक्त अपने वाद्यों के साथ धूमधाम से संकीर्तन करते हुए चले । ठाकुरजी के डोले के आगे साध्वियाँ पूरे रास्ते नृत्य करते हुए चलीं । साधुओं के इस शाही स्नान में अन्य सन्त-महन्त तो हाथी-घोड़े और अन्य वाहनों पर सवार होकर चल रहे थे जबकि श्रीबाबा महाराज पूर्ण दैन्य का परिचय देते हुए सबसे पीछे और पैदल चले । पूरे कुम्भ के शाही स्नान में चलने वाले साधु-सन्तों के दलों में सबसे पीछे चलने पर भी मान मन्दिर के भक्तों के दल की शोभा सबसे अधिक थी । यह शाही स्नान शोभा यात्रा पूरे वृन्दावन नगर में होकर निकली तो वहाँ के निवासियों ने मान मन्दिर के दल का सबसे अधिक स्वागत

किया । श्रीबाबा महाराज के पैदल और सबसे पीछे चलने के कारण सभी लोग श्रीबाबा की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे । मीडिया के कैमरे वाले श्रीबाबा और उनके दल के फोटो लेने में जुट गये । श्रीबाबा और उनके नेतृत्त्व में मान मन्दिर के दल ने सम्पूर्ण शाही स्नान में सबसे अधिक प्रशंसा अर्जित की । एक दिन श्रीबाबा की प्रेरणा से इस कुम्भ मेले में यमुनाजी को प्रदुषण मुक्त करने एवं स्वच्छ बनाने के उद्देश्य से मान मन्दिर के पाण्डाल में सन्तों का एक विशाल सम्मलेन आयोजित किया गया, जिस लक्ष्य के साथ ही श्रीबाबा ने वृन्दावन कुम्भ में पहली बार आना स्वीकार किया था किन्तु इस सन्दर्भ में अत्यन्त ही आश्चर्यजनक एवं दुखद घटना यह घटित हुई कि कुम्भ में पधारे अत्यन्त उग्र नागा साधुओं ने एक दिन पहले सन्त समाज के समक्ष यह घोषणा कर दी कि जो भी साधु मान मन्दिर के सन्त सम्मलेन में जाएगा, उसे गोली से मार दिया जाएगा । इस घोषणा का यह दुष्परिणाम हुआ कि सन्त समाज भयभीत हो गया और वृन्दावन के वरिष्ठ सन्तों में कोई भी मान मन्दिर के सन्त सम्मलेन में नहीं आया । इस घटना के कुछ समय बाद वृन्दावन के सन्तों ने एक प्रसिद्ध धर्माचार्य के पाण्डाल में अलग से एक सन्त सम्मलेन आयोजित करवाया और उसमें श्रीबाबा को भी निमन्त्रित किया । शिष्टाचार के नाते श्रीबाबा उस सम्मलेन में चले तो गये किन्तु उन्होंने सभी के सामने अपने विचार व्यक्त करते हुए निर्भीकता के साथ कहा कि मैंने वृन्दावन कुम्भ में कभी भाग नहीं लिया था, इस बार के कुम्भ में लोगों के बहुत आग्रह करने पर इसी लक्ष्य के साथ मैं आया था कि वृन्दावन में यमुनाजी के प्रदूषण की बहुत बड़ी समस्या है तो वृन्दावन के सन्त समाज के सहयोग से इस समस्या को सुलझाने का प्रयास करूँगा और इसी उद्देश्य से मैंने मान मन्दिर के पाण्डाल में विशाल सन्त सम्मलेन का आयोजन किया था किन्तु यहाँ तो विस्फोट हो गया, नागा साधुओं द्वारा उस सम्मलेन में जाने वाले साधुओं को गोली मारने की धमकी देने के कारण कोई भी सन्त उस सम्मलेन में नहीं आया, कोई बात नहीं, किसी अहंकार के कारण नहीं अपितु श्रीराधारानी के बल पर इस सम्मलेन में मैं घोषणा करता हूँ कि आगे चलकर यमुनाजी की प्रदूषण मुक्ति का आन्दोलन अवश्य ही चलाया जायेगा, उसमें श्रीजी की कृपा से सफलता मिलेगी और एक दिन श्रीयमुनामहारानी अविरल व निर्मल होकर ब्रजभूमि में प्रवाहित होगीं ।

अभी तक तो यह समझा जाता था कि यमुनाजी ब्रज में बहुत प्रदूषित हो चुकी हैं तो इसीलिए श्रीबाबा के द्वारा यमुना की स्वच्छता के लिए प्रयास किये गये किन्तु श्रीबाबा के द्वारा यमुनाजी की स्वच्छता पर बहुत अधिक ध्यान दिए जाने पर आगे उनके निर्देशानुसार मान मन्दिर की एक टीम ने यमुनोत्री से लेकर वृन्दावन तक विस्तृत सर्वेक्षण किया तो पता लगा कि यमुनोत्री से यमुनाजी का जल हरियाणा तक तो बहुत स्वच्छ रहता है किन्तु हरियाणा में बहुत साल पहले यमुना नगर में यमुनाजी के ऊपर एक विशाल हथनी कुण्ड बैराज बनाकर यमुनाजी का सारा जल वहीं रोक लिया और एक नहर निकालकर यमुनाजी का सम्पूर्ण जल हरियाणा की ओर प्रवाहित कर दिया गया तथा बैराज के माध्यम से फाटक लगाकर यमुनाजी को हरियाणा में ही कैद कर लिया । हथनी कुण्ड के आगे से ब्रज तक केवल सूखी बालू का ही क्षेत्र है । दिल्ली के गंदे नाले, जिनमें वहाँ के कारखानों का प्रदूषण और करोड़ों लोगों का मल-मूत्र जमा है, उसी से युक्त गन्दा जल ब्रज-वृन्दावन की ओर प्रवाहित कर दिया जाता है । इस स्थिति के बारे में वर्षों तक किसी को कुछ पता नहीं था, श्रीबाबा महाराज के द्वारा जब सर्वेक्षण करवाया गया, तब इस भयावह वास्तविकता का पता चल पाया । जब यह पता चल गया कि वास्तव में यमुनाजी तो ब्रज में हैं ही नहीं, उन्हें तो हरियाणा के हथनी कुण्ड बैराज पर रोक लिया गया है, उसके बाद फिर श्रीबाबा महाराज के द्वारा यमुनाजी को ब्रज में लाने का व्यापक आन्दोलन चलाया गया । श्रीबाबा महाराज की प्रेरणा से मान मन्दिर के साधु-सन्तों ने ब्रज के सभी गाँवों में जाकर ब्रजवासियों को यमुनाजी की वास्तविकता से अवगत करवाया और इसके बाद तीन-चार बार ब्रज से दिल्ली की ओर विशाल यमुना यात्रा निकाली गयी । पहली बार तो प्रयाग से लेकर दिल्ली तक हजारों लोगों ने पद यात्रा की, उस समय सरकार ने केवल आश्वासन ही दिया । इसके बाद वृन्दावन से दिल्ली और तदनन्तर बरसाना से दिल्ली तक लाखों यमुना भक्तों और ब्रजवासियों ने श्रीबाबा महाराज के आह्वान पर दिल्ली तक पद यात्रा की । सन् २०१५ में जब आदरणीय श्रीमोदीजी देश के प्रधानमन्त्री थे, उस बार की बरसाने

से दिल्ली तक की यमुनायात्रा में वृन्दावन के अधिकतर सभी सन्तों ने भाग लिया था । इसका कारण यह था कि इस वर्ष की श्रीयमुनायात्रा में श्रीबाबामहाराज ने मानमन्दिर के यमुनायात्रा के संचालकों से कह दिया था कि इस बार की यात्रा में तुम लोग वृन्दावन के सन्तों को आगे करके चलना । भाषण देने के लिए स्वयं मंच पर मत आना, इसके लिए वृन्दावन के सन्तों को ही अवसर देना । इसी तरह जब मीडिया कर्मी पत्रकार आदि आयें तो उनके कैमरे के सामने भी फोटो खिंचवाने एवं उनसे बात करने के लिए स्वयं को आगे न करके वृन्दावन के सन्तों को ही विशेष अवसर प्रदान करना । यदि ऐसा करोगे तो तुम सबका हृदय जीत लोगे और वास्तव में मान मन्दिर के यमुनायात्रा-संचालकों ने श्रीबाबामहाराज की आज्ञा का पालन किया तो वृन्दावन के सन्तों ने इस यमुना यात्रा में बढ़-चढकर हिस्सा लिया था । इससे सारे देश में यमुनाजी के सन्दर्भ में अभूतपूर्व जनचेतना जागृत हुई तथा सरकार पर भी भारी दबाव पड़ा किन्तु सरकार ने केवल यमुनाजी को हथनी कुण्ड से मुक्त करने का आश्वासन ही दिया, अभी यमुनाजी का ब्रज में आने का कार्य अधूरा ही बाकी है । श्रीबाबामहाराज का कहना है कि मानमन्दिर में जो प्रतिदिन श्रीजी की संकीर्तन-आराधना की जाती है तो श्रीजी की कृपा से यमुनाजी एक दिन ब्रज में अवश्य ही पधारेंगी । श्रीबाबामहाराज ने अब तक ब्रज में जो भी कार्य किये, उनके सभी संकल्प श्रीजी ने पूर्ण किये, इसलिए यमुनाजी का भी एक दिन राधारानी की कृपा से शीघ्र ही ब्रज में आगमन होगा ।

यमुना-आन्दोलन के ही दौरान एक बार राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आर.एस.एस.) के अध्यक्ष 'श्रीमोहनभागवतजी' ब्रज में आये तो सर्वप्रथम वे मानमन्दिर में श्रीबाबामहाराज से मिलने के लिए ही आये । जब वे श्रीबाबा के कमरे में पहुँचे तो उन्होंने मोहनभागवतजी को गर्गसंहिता से गोलोक धाम से यमुनाजी के पृथ्वी पर अवतरण की विस्तृत कथा सुनायी । श्रीबाबा ने यमुनाजी के सम्बन्ध में गर्गसंहिता का प्रमाण इसलिए दिया क्योंकि यमुना आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में भारत सरकार ने ऐसा कहा था कि अभी हमारी कार्य योजना में गंगाजी का निर्मलीकरण प्रथम स्थान पर है और यमुनाजी की स्वच्छता दूसरे स्थान पर है । इसलिए भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में पधारे श्रीमोहनभागवत को श्रीबाबा ने गर्गसंहिता के माध्यम से बताया कि वास्तव में यमुनाजी ही गोलोक धाम से जब पृथ्वी पर आयीं तो वे ही गंगाजी को गोलोक से अपने साथ लायीं और यमुनाजी की महिमा गंगा से सौ गुना अधिक है । यमुनाजी की महिमा बताने के बाद फिर श्रीबाबा ने श्रीमोहनभागवतजी से स्पष्ट रूप से कह दिया कि यमुनाजी को ब्रज में न तो मैं ला सकता हूँ, न आप और न ही श्रीमोदीजी ला सकते हैं, मेरा पूर्ण विश्वास है कि वे तो एकमात्र श्रीराधारानी की कृपा से ही एक दिन ब्रज में अवश्य पधारेंगी । इससे पता चलता है कि श्रीबाबामहाराज कभी भी सरकार का, किसी प्रसिद्ध व्यक्ति का, धनी व्यक्ति का अर्थात् जीव का आश्रय कभी नहीं लेते हैं, वे तो सदा राधारानी पर ही पूर्ण आश्रित रहते हैं और यही सबको शिक्षा भी देते हैं । भारत सरकार पर अपना पूर्ण प्रभाव रखने वाले राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जैसी प्रतिष्ठित संस्था के अध्यक्ष मोहन भागवत जैसे महत्वपूर्ण व्यक्ति से भी श्रीबाबा ने स्पष्ट कह दिया कि यमुनाजी न तो आपके प्रयास से, न मेरे प्रयास से और न ही प्रधान मन्त्री श्रीमोदीजी के प्रयत्न से ब्रज में आ सकेंगी, केवल वृन्दावनेश्वरी श्रीराधारानी की कृपा से ही उनका ब्रज में आगमन सम्भव है । किसी भी जीव का आश्रय न लेकर एकमात्र श्रीजी का आश्रय लेना, यह श्रीबाबामहाराज की एक ऐसी विशेषता है, जो श्रीजी के एक विशुद्ध भक्त का लक्षण है ।

गौ–सेवकों की जिज्ञासा पर माताजी गौशाला का

Account number दिया जा रहा है –

SHRI MATAJI GAUSHALA, GAHVARVAN,BARSANA, MATHURA

Bank – Axis Bank Ltd , A/C – 915010000494364

IFSC – UTIB0001058 BRANCH – KOSI KALAN, MOB. NO. –9927916699

'ब्रज के कुण्डों' का जीर्णोद्धार

श्रीबाबा जब ब्रज में आये थे तो उन्होंने देखा कि डभारा गाँव का महत्वपूर्ण सरोवर रत्न कुण्ड, जिसके तट पर श्रीजी ने रत्नों को बोया था और एक दिन में ही उससे बड़े-बड़े रत्नों के वृक्ष निकल आये, वह कुण्ड पूरी तरह लुप्त हो चुका था, खेत बन गया था, चकबन्दी में चला गया था । श्रीबाबा इस कुण्ड के लुप्त होने से बहुत दुखी थे और वह पुनः इसका पुनरुद्धार करना चाहते थे । आगे चलने पर जब साधन बना तो श्रीबाबा के आदेश से उस खेत को चार लाख रुपये में खरीदा गया, जे.सी.बी. मशीन से उसकी खुदाई की गयी, पुनः उसे कुण्ड का स्वरूप दिया गया और उसके चारों ओर घाट बनाया गया । जिस प्रकार श्रीचैतन्य महाप्रभु जब पहली बार ब्रज में आये थे, उस समय राधा कुण्ड लुप्त हो गया था, धान का खेत बन गया था, धान के खेत में जो जल था, उसी में आचमन करके उन्होंने लोगों को बताया कि यह राधा कुण्ड है । आगे चलकर महाप्रभु के परिकर षड गोस्वामियों में श्रीरघुनाथ गोस्वामीजी राधा कुण्ड के तट पर रहे और उन्होंने उसके चारों ओर घाट का निर्माण करवाया । इसी प्रकार श्रीबाबामहाराज ने भी श्रीराधारानी की लीला से जुड़े किन्तु काल के प्रवाह से लुप्त हो चुके अत्यधिक महत्वपूर्ण कुण्ड का पुनरुद्धार किया । आगे चलकर ब्रजयात्रा के दौरान गोवर्धन में जतीपुरा में स्थित एक अतिशय महत्वपूर्ण रुद्र कुण्ड की दुर्दशा पर श्रीबाबा महाराज का ध्यान गया । एक बार श्रीबाबा ने यात्रा के दौरान वहाँ के निवासियों को इस कुण्ड की महिमा बताते हुए कहा कि जब श्रीकृष्ण ने गोवर्धन धारण लीला की तो उनकी इस लीला को देखने के लिए कैलाश पर्वत से महादेवजी भी अपनी भार्या देवी पार्वती और अन्य परिकरों के साथ आये और इसी स्थान से उन्होंने गिरिराज लीला का दर्शन किया था । रुद्र अर्थात् महादेवजी के द्वारा यहाँ आकर लीला देखने के कारण ही इस कुण्ड का नाम 'रुद्र कुण्ड' हुआ । इसी प्रकार इस कुण्ड से जुड़ी एक अन्य लीला का महत्त्व बताते हुए महाराजजी ने बताया कि जब महारास लीला के समय श्यामसुन्दर राधारानी को लेकर अन्य गोपियों को छोड़कर चले गये थे तो आगे चलकर श्रीजी के मान करने पर वे उन्हें भी यहीं छोड़कर अन्तर्धान हो गये थे । श्यामसुन्दर के अन्तर्धान होने से उनकी विरह व्यथा से पीड़ित होकर श्रीजी ने यहाँ रुदन किया तो उनके रुदन के कारण उनके अश्रुओं से इस रुद्र कुण्ड का निर्माण हुआ । ये लीलायें बताने के बाद श्रीबाबा ने वहाँ के ब्रजवासियों को अत्यधिक कटु शब्दों का प्रयोग करते हुए कहा कि ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ के सब ब्रजवासी मर गये, यहाँ के आजकल के सब गोस्वामी और आचार्य भी मृत्यु को प्राप्त हो गये क्योंकि श्रीजी के रुदन से बना कुण्ड, जहाँ महादेवजी ने आकर गिरिराज लीला का दर्शन किया, उसमें मल-मूत्र जमा हो जाने से कुण्ड नष्ट हो चुका है, जबकि यहीं पर गिरिराजजी का मुखारविन्द भी है, जिनको प्रतिदिन लाखों रुपये के छप्पन भोग लगाये जाते हैं, बड़े-बड़े सम्प्रदाय आचार्य यहाँ प्रायः आते रहते हैं किन्तु इस कुण्ड की दुर्दशा को देखकर किसी को दुःख नहीं होता है, इस कुण्ड के जीर्णोद्धार हेतु कोई एक पैसा खर्च नहीं करना चाहता, अत्यन्त कष्ट के कारण इसीलिए मुझे यह कहना पड़ता है कि यहाँ का समाज मृतप्राय हो चुका है । बाबाश्री के द्वारा अत्यधिक कठोर भाषा प्रयोग करने के कारण यहाँ के स्थानीय ब्रजवासियों में जागृति आई और उन्होंने श्रीबाबा से कहा – 'महाराज ! आपने कह दिया कि यहाँ के सब लोग मर गये तो फिर आप स्वयं अपने को किस स्थिति में देखते हैं ?' श्रीबाबा ने कहा कि अरे केवल तुम ही नहीं मरे बल्कि इतने महत्वपूर्ण कुण्ड की दुर्दशा को मैं देख रहा हूँ, अतः मैं भी मर चुका हूँ । लेकिन अब देखो, तुम लोग इस कुण्ड के जीर्णोद्धार के लिए जुट जाओ, यह तुम्हारा कुण्ड है, तुम्हारी धरोहर है, इसकी रक्षा तुम लोग नहीं करोगे तो और कौन करेगा ? तुम्हारे साथ मैं भी इस कुण्ड को बचाने हेतु मरने को तैयार हूँ, अब तुम लोग इस कुण्ड की सुरक्षा के लिए मेरे साथ मैदान में आ जाओ । श्रीबाबा की बात सुनकर वहाँ के ब्रजवासियों ने कहा कि महाराज ! जब आप हमारे कुण्ड को बचाने का प्रयास करेंगे तो अब तो इस कुण्ड के लिए हम भी मरने को तैयार हैं । इन लोगों ने श्रीबाबा को बताया कि इस कुण्ड के साथ सबसे बड़ी समस्या यह है कि

यहाँ के एक शक्तिशाली व्यक्ति ने इस कुण्ड पर अतिक्रमण कर रखा है, यहाँ की सारी भूमि पर अवैध रूप से कब्ज़ा कर लिया है । अतः इस कुण्ड का संरक्षण कैसे होगा ? श्रीबाबा ने कहा कि कलियुग की समस्त विकराल समस्याओं का एकमात्र हल है – 'भगवन्नाम-कीर्तन' । इसलिए चिन्ता मत करो, मान मन्दिर के साधु-सन्त यहीं रुद्र कुण्ड के तट पर रहकर इसके पुनरुद्धार के निमित्त अखण्ड कीर्तन करेंगे, तुम लोग भी उसमें सहयोग करना । भगवन्नाम पर भरोसा रखो और इसी नाम कीर्तन के बल पर तुम्हारे इस रुद्र कुण्ड का जीर्णोद्धार हो जाएगा । इसके बाद श्रीबाबा महाराज ने हम लोगों से कहा कि गिरिराजजी के इतने महत्वपूर्ण कुण्ड के जीर्णोद्धार के लिए तुम लोग जतीपुरा, गोवर्द्धन में रुद्र कुण्ड के तट पर वास करते हुए अखण्ड कीर्तन करो । गिरिराजजी तुम्हारी इस कीर्तन भक्ति से अवश्य ही प्रसन्न होंगे और कृपा करेंगे, वहाँ अवश्य ही चमत्कार होगा । श्रीबाबा महाराज की आज्ञा से हम लोग दिसम्बर-जनवरी की कड़ाके की ठण्ड में जतीपुरा कीर्तन के लिए पहुँच गये, सर्वप्रथम जतीपुरा में विशाल नगर कीर्तन के साथ वहाँ के ब्रजवासियों को जागृत किया गया, तत्पश्चात् रुद्र कुण्ड के तट पर एक रावटी लगायी गयी और उसी में अखण्ड कीर्तन का शुभारम्भ किया गया । जतीपुरा में वल्लभ सम्प्रदाय का प्रभुत्व है और वहाँ साधु-सन्तों के भण्डारों का प्रायः ही आयोजन होता रहता है । इसलिये हम लोग जब वहाँ पहुँचे तो जतीपुरा के स्थानीय गोस्वामियों ने कहा कि आप लोगों के लिए अमुक स्थान पर भण्डारे की व्यवस्था रहेगी, प्रतिदिन वहीँ पर प्रसाद ग्रहण कीजिये किन्तु श्रीबाबा महाराज ने हम लोगों से पहले ही कह दिया था कि जतीपुरा में किसी भण्डारे में प्रसाद न ग्रहण करके कीर्तन करते हुए ब्रजवासियों के घरों से मधुकरी माँगना, इससे वहाँ भगवन्नाम कीर्तन का घर-घर में प्रचार होगा । श्रीबाबामहाराज की आज्ञा का पालन करते हुए कीर्तन के साथ जतीपुरा में मधुकरी माँगी गयी और अखण्ड कीर्तन भी प्रारम्भ कर दिया गया । जैसा कि श्रीबाबा ने हम लोगों से पहले ही कह दिया था कि गिरिराजजी की तलहटी में कीर्तन करने से चमत्कार होगा तो पन्द्रह दिनों के अखण्ड कीर्तन के बाद वहाँ एक ऐसा अद्भुत चमत्कार हुआ कि मल-मूत्र और कूड़े-कचरे के ढेर से युक्त अत्यधिक दूषित रुद्र कुण्ड के जल में दूध की धारा प्रकट हुई । इस चमत्कार को सभी ने देखा, पत्रकारों ने भी इस समाचार को अपने अख़बारों में प्रमुखता से प्रकाशित किया और दुग्ध की धारा की फोटो भी डालीं । बड़े आश्चर्य की बात तो यह रही कि यह घटना केवल एक बार ही नहीं घटी अपितु थोड़े दिनों के बाद पुनः रुद्र कुण्ड के प्रदूषित जल में दुग्ध धारा प्रकट हुई । श्रीबाबामहाराज को यह सूचना प्राप्त हुई तो उन्होंने मान मन्दिर को एकादशी के सत्संग में आने वाले अधिकतर गाँवों के ब्रजवासियों को इसके बारे में बताया और उनसे कहा कि तुम लोग भी गिरिराजजी की परिक्रमा करने जाओ और वहाँ रुद्र कुण्ड के इस विलक्षण चमत्कार का दर्शन करो । श्रीबाबा ने सबसे यह भी कहा कि भगवन्नाम कीर्तन का ही यह चमत्कार है कि इस घोर कलियुग में भी मल-मूत्र और कूड़े-कचरे से भरे कुण्ड के दूषित जल में दुग्ध धारा का एक नहीं, दो बार प्राकट्य हुआ । आगे चलकर कुण्ड से सम्बन्धित एक दुखद घटना यह घटी कि जिस व्यक्ति ने रुद्र कुण्ड पर अतिक्रमण कर रखा था, उसी ने इलाहाबाद हाई कोर्ट में झूठी याचिका पेश कर दी कि हम लोग तो रुद्र कुण्ड का संरक्षण करना चाहते हैं किन्तु ये मान मन्दिर के लोग भू-माफिया हैं, जो बाहरी लोग हैं और ये हमारे कुण्ड पर जबरन कब्ज़ा करना कहते हैं । हाई कोर्ट ने वास्तविकता का निरीक्षण किये बिना और दूसरे पक्ष की बात को सुने बिना ही रुद्र कुण्ड पर 'स्टे' लगा दिया । 'स्टे' का अभिप्राय यह हुआ कि अब हाई कोर्ट के आदेशानुसार मान मन्दिर सेवा संस्थान रुद्र कुण्ड के सन्दर्भ में कुछ भी नहीं कर सकता था, यहाँ तक कि प्रशासन भी रुद्र कुण्ड पर किये गये अवैध लोगों के अतिक्रमण को, उनके अवैध कब्जे को नहीं हटा सकता था । इस बात का जब श्रीबाबा महाराज को पता चला तो उन्होंने कहा कि हम लोग निराश नहीं होंगे क्योंकि हमारी सर्वोच्च सरकार तो युगल सरकार श्रीराधामाधव ही हैं और सच्चा न्याय तो उनके दरबार में ही होता है ।

तेरा ही द्वार सच्चा दीनों का द्वार है । राधा कृपा दया की तू ही आधार है ॥

श्रीबाबा ने मान मन्दिर के साधुओं से कहा कि तुम लोग निराश मत हो, उत्साह के साथ अखण्ड कीर्तन करते रहो । अच्छे काम में आरम्भ में बाधायें ही आती हैं किन्तु उनसे हतोत्साहित मत हो, आगे चलकर श्रीजी की कृपा से विजय हम लोगों को ही प्राप्त होगी । श्रीबाबा की वाणी सत्य हुई और आगे चलकर मान मन्दिर संस्थान द्वारा हाई कोर्ट में मजबूती के साथ अपना पक्ष प्रस्तुत करने पर जब न्यायालय को वास्तविकता का पता चला तो उसने अपने स्टे को हटा लिया, विरोधी पक्ष की बुरी तरह पराजय हुई और इस तरह फिर प्रशासन को आगे की कार्रवाही करने का अधिकार मिल गया, फिर तो प्रशासन ने कुण्ड के जीर्णोद्धार में सबसे बड़ी बाधा बने अवैध कब्जों को बुरी तरह ध्वस्त कर डाला । जब अवैध अतिक्रमण का समूल विनाश कर दिया गया, उसके बाद फिर श्रीबाबामहाराज की प्रेरणा से रुद्र कुण्ड का भव्य रूप से जीर्णोद्धार और सौन्दर्यीकरण किया गया ।

'देवसरोवर' का चमत्कारिक प्राकट्य

प्रायः भारत के लोग हिमालय में स्थित बद्रीनाथ को ही जानते हैं किन्तु उन्हें यह नहीं पता कि उसका भी मूल आदिबद्री ब्रज में है और जिसकी महिमा हिमालय स्थित बद्रीनाथ से भी अधिक है, जहाँ रास के समय श्रीराधा-माधव ने विहार किया था और स्वयं बद्रीनारायण भगवान् एवं लक्ष्मीजी ने उनके विहार के लिए आदिबद्री धाम को सजाया था तथा वहाँ बहुत ही रमणीक देव सरोवर का निर्माण किया था । इस कथा का विस्तृत वर्णन गर्ग संहिता में किया गया है । पहले ब्रज के इन दुर्लभ स्थलों को स्थानीय लोगों को छोड़कर और कोई नहीं जानता था । श्रीबाबा महाराज ने ही सर्वप्रथम ऐसे स्थलों की खोज की, ग्रन्थों में उनकी महिमा का अध्ययन किया और इसके बाद राधारानी ब्रजयात्रा के माध्यम से सभी को इनका दर्शन करवाकर इनके माहात्म्य से परिचित कराया । आदिबद्री में वहाँ के मन्दिर के महन्त महात्मा श्रीगोपीदासजी श्रीबाबा महाराज से बहुत प्रेम करते थे । उन्होंने ही सर्वप्रथम आदिबद्री क्षेत्र के अत्यधिक महत्त्वपूर्ण पर्वतों को खनन से मुक्त कराया था और यहाँ के पर्वतों के संरक्षण के लिए उन्हें जेल तक जाना पड़ा था । वे श्रीबाबा से अक्सर कहा करते थे कि आदिबद्री में पहले अत्यधिक रमणीक देव सरोवर था, आप ग्रन्थों में उसके बारे में खोज करना, उसकी महिमा का अध्ययन करना और यदि सम्भव हो सके तो उसका पुनर्निर्माण करवाना । उनके कहने पर ही श्रीबाबा ने कई ग्रन्थों में देव सरोवर के बारे में पढ़ा किन्तु कहीं भी उसका उल्लेख नहीं मिला । ब्रजाचार्य श्रीनारायणभट्टजी के ग्रन्थ ब्रज भक्ति विलास को देखा, जिसमें ब्रज के सभी वनों और सरोवरों का वर्णन किया गया है किन्तु उसमें इस सरोवर का कोई वर्णन नहीं है । अन्त में श्रीबाबा ने जब महर्षि गर्ग द्वारा रचित गर्ग संहिता का अध्ययन किया तो उसमें देव सरोवर का उल्लेख प्राप्त हो गया । इस सरोवर की अगाध महिमा का विचारकर श्रीबाबा ने इसके पुनः प्राकट्य की योजना बनायी और इसके लिए बहुत प्रयास भी किया किन्तु सफलता नहीं मिल सकी, फिर भी श्रीबाबा ने अपना प्रयत्न छोड़ा नहीं । आगे चलकर श्रीबाबा की प्रेरणा से कुशल इन्जीनियरों को इस सरोवर के पुनर्निर्माण का उत्तरदायित्व सौंपा गया । इन अभियन्ताओं ने सरोवर के निर्माण का जो प्रोजेक्ट बनाया, उसके अनुसार ८० लाख रुपयों की धनराशि से देवसरोवर का निर्माण हो सकता था । श्रीबाबा महाराज तो कभी अपने पास एक पैसा भी नहीं रखते और न ही कभी उन्होंने किसी कार्य के लिए धन की याचना की । श्रीबाबा ने कहा कि अब हम लोगों को श्रीजी की कृपा का ही आश्रय लेकर इस सरोवर के निर्माण कार्य में लग जाना चाहिए, वे ही कृपा करेंगी और यह शुभ कार्य निश्चित ही सफलता पूर्वक सम्पन्न हो जाएगा । सन् २०१५ में मई-जून के झुलसाने वाले गर्मियों के मौसम में देव सरोवर के पुनर्निर्माण हेतु अभियान छेड़ दिया गया । श्रीबाबा ने इसके लिए मान मन्दिर के साधुओं-साध्वियों एवं गुरुकुल के बालक-बालिकाओं को प्रेरित किया । श्रीबाबा महाराज की प्रेरणा प्राप्त करके ये सभी देव सरोवर के निर्माण कार्य में जुट गये और भयानक ग्रीष्म ऋतु में भी मान मन्दिर की इस टीम ने अथक परिश्रम किया । मान मन्दिर की समस्त साध्वियाँ श्रीबाबा की प्रेरणा से नित्य ही बरसाना से आदिबद्री आती थीं और एक श्रमिक की भाँति फावड़ा चलातीं, तसले ढोतीं तथा संध्या को मान

मन्दिर जाकर वहाँ की संकीर्तन आराधना में दो घंटे नृत्य भी करती थीं । साधु-सन्तों और बच्चों ने भी बहुत परिश्रम किया । सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात तो यह थी कि स्वयं श्रीबाबा महाराज अस्वस्थता के बावजूद भी प्रतिदिन अपने वाहन से यहाँ आते थे और वे भी तसले में बजरी-बालू-सीमेंट के मसाले इत्यादि को एक मजदूर की तरह अपने सिर पर ढोते हुए मशीन में डाला करते थे । उनके सेवक श्रीब्रजराजजी 'बाबा' के तसले में कम पदार्थ रखते तो श्रीबाबा कहते कि नहीं, अभी इसमें और डालो । श्रीबाबा एक-दो बार नहीं बल्कि कई बार अपने सिर पर तसले को ढोते हुए मशीन में बजरी आदि पदार्थ डाला करते थे । एक बार तो श्रीबाबा ने यहाँ सेवा करने वाले सभी भक्तों से कहा कि आज तुम लोग कार्य कर लो, आगे से तुम्हें यहाँ नहीं आना पड़ेगा । उन्होंने यहाँ तक कहा कि आज रात भर काम पूरा कर लो क्योंकि एक-दो दिन में वर्षा होने वाली है । श्रीबाबा ने कहा कि आज मैं भी बरसाना नहीं जाऊँगा, ये कन्यायें भी नहीं जायेंगी, यहीं मैं संकीर्तन आराधना करूँगा और ये बालिकायें यहीं नृत्य करेंगी । उस समय मान मन्दिर के साधुओं ने श्रीबाबा से कहा कि आप यहाँ मत रुकिए, बरसाना चले जाइये, वहीँ पर संकीर्तन आराधना करिए, इन बालिकाओं को भी ले जाइए, हम लोग आपकी आज्ञा से आज यहाँ रात भर कार्य करेंगे । सन्तों के ऐसा कहने पर श्रीबाबा बरसाना चले गये, साध्वियाँ भी चली गयीं और फिर तो श्रीबाबा की इच्छानुसार सभी साधुओं ने पूरी रात कठोर परिश्रम किया । जैसा कि श्रीबाबा ने कहा था, प्रातः काल वर्षा होने लगी किन्तु कुछ देर बाद रुक गयी, अब तो सभी को श्रीबाबा की वाणी पर पूर्ण विश्वास हो गया कि अधिक वर्षा होने से पहले ही कार्य पूर्ण कर लो । फिर क्या था, बाबा महाराज के मिशन को पूरा करने के लिए गुरुकुल के बालक एवं मान मन्दिर के साधु-सन्त जुट गये और उन्होंने चिलचिलाती हुई धूप में कठोर श्रम किया । संध्या को लगभग चार-पाँच बजे अकस्मात् आसमान में काले-काले बादल उमड़ने लगे और धीरे-धीरे बूँदें बरसाने लगे । उस समय तक कार्य पूर्ण ही हो गया था । थोड़ी ही देर में बड़ी घनघोर वर्षा होने लगी । उस समय हम सभी लोग वहाँ उपस्थित थे और इस चमत्कारिक दृश्य को अपनी आँखों से देखा । चारों ओर पर्वत श्रंखलाओं से अत्यधिक तेज गति से पानी बहता हुआ सरोवर में प्रवेश कर रहा था और थोड़ी ही देर में सारा सरोवर जल से भर गया । अत्यन्त आश्चर्य की घटना तो यह हुई कि आदिबद्री धाम के बाहर कहीं भी वर्षा की एक बूँद तक नहीं गिरी, सब ओर कड़ी धूप और गर्मी थी । श्रीबाबा को इस घटना की सूचना मिली तो वे बहुत प्रसन्न हुए और अगले दिन सुबह ही वे अपनी गाड़ी से आदिबद्री पहुँचे, देवसरोवर का अवलोकन किया । श्रीबाबा ने उस समय कहा – 'यह तीर्थ (देव सरोवर) अपने प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रहा था और इसका निर्माण होते ही प्रभु ने तुरन्त ही इसे चमत्कारिक रूप से जल से भर दिया ।' इन्जीनियरों ने जिस कार्य को करने के लिए ८० लाख रुपये का प्रोजेक्ट बनाया था, श्रीबाबा महाराज की प्रेरणा से मान मन्दिर के सन्तों-साध्वियों एवं बच्चों के प्रयास से वह कार्य केवल १२-१३ लाख रुपये में सम्पन्न हो गया । इस प्रकार श्रीबाबा महाराज के द्वारा आदिबद्री धाम के दुर्लभ देव सरोवर का पुनर्निर्माण हो गया ।

'पीली पोखर' की सफाई

इसके पश्चात् ही बरसाने के प्रसिद्ध प्रिया कुण्ड (पीली पोखर) के शोधन का ऐतिहासिक कार्य श्रीबाबा महाराज के द्वारा किया गया । इस कुण्ड का सम्बन्ध बरसाने के श्रीजी मन्दिर के गोस्वामियों से है । मान मन्दिर पर प्रति वर्ष ठाकुरजी का पाटोत्सव मनाया जाता है । उसमें नन्दगाँव और बरसाने के गोस्वामीगण पधारते हैं और उनके द्वारा समाज गान होता है । एक बार इसी उत्सव पर श्रीजी मन्दिर के गोस्वामी जनों ने श्रीबाबा महाराज से प्रिया कुण्ड (पीली पोखर) के जीर्णोद्धार का अनुरोध किया । उन्होंने कहा कि इस कुण्ड की सफाई का कार्य आज तक कभी नहीं हो सका है । एक बार किसी संस्था ने कुण्ड के चारों ओर केवल घाट का निर्माण करवा दिया किन्तु मुख्य कार्य कुण्ड का शोधन उसने नहीं किया । इस पीली पोखर के शोधन का कार्य भी आप ही कर सकते हैं क्योंकि आपने ब्रज में अगणित असम्भव प्रतीत होने वाले कार्य किए हैं । जब श्रीजी के मन्दिर के गोस्वामियों ने इस प्रकार श्रीबाबा महाराज से प्रार्थना की तो देव सरोवर

के निर्माण के बाद ही सन् २०१५ में जुलाई के महीने में उन्होंने प्रिया कुण्ड के शोधन का असम्भव कार्य प्रारम्भ कर दिया । प्रिया कुण्ड श्री प्रियाजी का कुण्ड है, जहाँ वे अपनी सखियों के साथ स्नान करती हैं और इसके चारों ओर की भूमि में वे सखियों के साथ विविध प्रकार के खेल खेलती हैं । श्यामसुन्दर के साथ सगाई होने पर उन्होंने अपने हल्दी लगे हाथों को इसी सरोवर के जल से धोया तो इसका जल पीला हो गया था, इसीलिए इसका नाम हो गया – 'पीली पोखर ।' एक बार रात्रि की संकीर्तन आराधना में ही श्रीबाबा ने मान मन्दिर की साध्वियों और बच्चों से कहा कि कल प्रातः काल से ही पीली पोखर के शोधन का कार्य प्रारम्भ होगा, तुम लोग कल श्रीजी की मंगला आरती के दर्शन करने के बाद प्रतिदिन की भाँति प्रभात फेरी मत करना बल्कि मंगला आरती में श्रीजी के दर्शन करके सीधे पीली पोखर पहुँच जाना और सफाई अभियान प्रारम्भ कर देना । श्रीबाबा के आदेशानुसार मान मन्दिर की साध्वियाँ और गुरुकुल के बालक-बालिकायें श्रीजी के दर्शन करके पीली पोखर पहुँच गये । मान मन्दिर के साधु भी वहाँ पहुँच गये । इधर मान मन्दिर में श्रीबाबा ने स्वयं भी पीली पोखर जाने का निश्चय कर लिया, ऐसा नहीं कि केवल साध्वियों और बालकों को आदेश दे दें कि तुम लोग वहाँ जाकर सफाई शुरू कर दो । श्रीबाबा ने अपने निजी सेवकों से कहा कि मैंने बालक-बालिकाओं को तो पीली पोखर भेज दिया है किन्तु मैं स्वयं भी वहाँ जाऊँगा । तुम लोग कोई भी मेरे साथ मत चलना, मैं अकेले और पैदल ही पीली पोखर जाऊँगा । बाबा महाराज के सेवकों ने श्रीबाबा के साथ चलने की बहुत प्रार्थना की किन्तु उन्होंने किसी को भी अपने साथ नहीं लिया और अपने कमरे से नीचे उतरकर अकेले और पैदल ही पीली पोखर के लिए चल दिए । बाद में किसी सेवक ने मान मन्दिर के प्रबन्धक श्रीराधाकान्तशास्त्री (भइयाजी) को सूचित किया कि श्रीबाबा तो पैदल और अकेले ही जा रहे हैं । भइयाजी तुरन्त ही अपनी मोटर बाइक लेकर आये और श्रीबाबा से उन्होंने बहुत प्रार्थना की कि आप मेरे साथ इस बाइक पर बैठ जाइए, अकेले मत जाइए, क्या मैं आपका नहीं हूँ ? उनके प्रेम के दबाव को मानकर श्रीबाबा उनके साथ चलने को तैयार हो गये तो भइयाजी अपनी मोटर बाइक पर बैठाकर श्रीबाबा को पीली पोखर ले गये । वहाँ मान मन्दिर की साध्वियाँ और गुरुकुल के बालक पहले ही उपस्थित थे । पीली पोखर की कीच को निकालकर उसकी सफाई करना बहुत ही जटिल कार्य था । वहाँ के वयोवृद्ध लोग तो ऐसा कहते थे कि जब से यह कुण्ड बना है, तब से आज तक कभी इसकी सफाई नहीं हुई । इसलिए उस कुण्ड में मनों कीच जमा थी । सेवा कार्य आरम्भ करने से पहले श्रीबाबा ने मान मन्दिर के साधुओं से कहा कि लाउड स्पीकर (ध्वनि विस्तारक यन्त्र) पर युगल मन्त्र के कीर्तन का कैसेट लगा दो ताकि प्रतिदिन सेवा के समय कीर्तन चलता रहे । श्रीबाबा की प्रेरणा से मान मन्दिर की साध्वियों ने फावड़ा चलाकर कीच को खोदना आरम्भ किया और कुण्ड के घाट पर ऊपर तक सभी बालिकायें और बालक अपने हाथों में बाल्टियों और तसलों में कीच भरकर बाहर फेंकने लगे । श्रीबाबा ने मान मन्दिर के साधुओं को रात के समय सेवा करने को कहा था । अतः वे रात के समय कीच को बाहर फेंकने का कार्य करते थे । इस कुण्ड में बहुत से काँच आदि चुभने वाले पदार्थ निकले जो कुण्ड की सफाई करते समय बालिकाओं और बालकों के हाथ में चुभ जाते थे, फिर भी सभी प्रकार के कष्ट सहते हुए इन सबने बड़े परिश्रम के साथ सेवा की । मान मन्दिर में पहले श्रीबाबा का सुबह का सत्संग होता था, उसे उन्होंने बन्द कर दिया और वे स्वयं प्रतिदिन अपने वाहन से पीली पोखर जाते थे तथा सेवा करने वाले भक्तों को घाट पर बैठकर सत्संग में पीली पोखर की महिमा, वहाँ की लीला सुनाया करते थे, जिससे कि पीली पोखर का माहात्म्य जानने से सेवा के प्रति उत्साह वर्द्धन हो । कथा सुनाकर स्वयं श्रीबाबा भी सबके साथ यथासामर्थ्य तसले-बाल्टी लेकर सेवा करते थे, जबकि उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था, वृद्ध अवस्था भी सेवा के बिलकुल प्रतिकूल थी किन्तु फिर भी श्रीबाबा प्रतिदिन पीली पोखर जाते, सबको सत्संग में वहाँ की महिमा सुनाते और सबके साथ सेवा भी करते थे । बाद में श्रीबाबा की आज्ञा से साधुगण रात के समय सेवा छोड़कर दिन में ही सबके साथ मिलकर प्रिया कुण्ड के शोधन में जुट गये । सबने साथ मिलकर कार्य किया तो कार्य जल्दी और आसानी से होने लगा । उस समय सुबह से दोपहर तक पीली पोखर पर बड़ा ही सुन्दर दृश्य उपस्थित रहता था । मान मन्दिर के साधु-सन्त, साध्वियाँ एवं गुरुकुल के बालक-बालिकायें मिलकर फावड़ा चलाकर

कीच निकालते और घाट पर भी दोनों तरफ ही साधु-साध्वियाँ एवं बालक खड़े होकर बाल्टियों और तसलों में कीच भरकर बाहर फेंका करते । निरन्तर कीच निकालते रहने से सभी के शरीर, कपड़े और चेहरे कीच से सन जाते, बिलकुल काले पड़ जाते थे । एक बार श्रीबाबा ने कहा कि तुम लोग जो यह सेवा कर रहे हो, तुम्हारे वस्त्र और शरीर प्रियाजी के इस पवित्र कुण्ड की कीच से पवित्र हो रहे हैं, ऐसा अवसर बार-बार नहीं मिलता । इसलिए ऐसी स्थिति में अपनी फोटो खिंचवा लो ताकि आगे स्मृति बनी रहेगी कि कभी पीली पोखर की सेवा करते समय हमारा पूरा शरीर और वस्त्र कुण्ड की काली कीच से सने रहा करते थे । श्रीबाबा की प्रेरणा से फिर कीच से सने हुए सभी भक्तों के फोटो खींचे गये, उनकी वीडियो बनायी गयी । श्रीबाबा महाराज के नेतृत्त्व और उनके सानिध्य में चार-पाँच महीने तक इस कुण्ड के शोधन का अभियान चलता रहा । दीर्घकाल के परिश्रम से की गयी सेवा रंग लायी और जो कार्य असम्भव-सा प्रतीत हो रहा था, वह पूर्णतया सम्भव हो गया तथा इस तरह प्रियाजी के इस कुण्ड की सफाई का अत्यधिक जटिल और ऐतिहासिक कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया । पीली पोखर के शोधन का अत्यधिक दुरूह कार्य पूर्ण हो जाने पर श्रीजी मन्दिर के गोस्वामीगण बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने श्रीजी मन्दिर में श्रीबाबा महाराज का विशेष सम्मान करने के लिए उन्हें वहाँ निमन्त्रित किया । पीली पोखर के शोधन कार्य में सम्मिलित मान मन्दिर के समस्त साधुओं, साध्वियों एवं गुरुकुल के बच्चों के सहित श्रीबाबा श्रीजी मन्दिर गये । गोस्वामीगणों ने श्रीजी की विशेष प्रसादी चुनरी ओढ़ाकर श्रीबाबा का सम्मान किया और कहा कि हम लोगों ने मान मन्दिर में पीली पोखर के शोधन का महाराजश्री से अनुरोध किया था और उन्होंने हमारे अनुरोध को स्वीकार करके पूर्णतया असम्भव से प्रतीत होने वाले कार्य को सम्भव करके दिखा दिया, जबकि आज तक इस कुण्ड के शोधन का कार्य कोई भी संस्था नहीं कर सकी थी । गोस्वामीगणों ने जो श्रीबाबा का सम्मान एवं उनकी प्रशस्ति की तो इसके उत्तर में दैन्यमूर्ति श्रीबाबा ने कहा – 'मैं किसी सम्मान प्राप्त करने के योग्य नहीं हूँ अपितु मेरे अन्दर तो इतनी ही योग्यता है कि आप लोग मेरे सिर पर पनहा (जूता) लगाओ ।' विचार करें कि यह श्रीबाबा का कितना बड़ा दैन्य है । पीली पोखर के शोधन जैसे अतिशय जटिल कार्य को करके अन्य लोग तो सम्मान के लिए विशेष रूप से लालायित होते और सम्मान प्राप्त होने पर गर्व से फूले न समाते किन्तु श्रीबाबा ने श्रीजी के गोस्वामियों से कहा कि मैं आप लोगों के सम्मान का नहीं अपितु आप लोगों के द्वारा जूते से पीटे जाने योग्य ही हूँ । इसे कहते हैं – तृणादपि सुनीचेन अर्थात् अपने को घास के तृण से भी अधिक नीचा समझना ।

'श्रीआराधन-शक्ति' से संगठन सहज

जिस समय सम्पूर्ण भारतवर्ष में भारतीय जनता पार्टी और उसके प्रेरक संगठन आर. एस. एस एवं विश्व हिन्दू परिषद् के नेतृत्त्व में अयोध्या में राम मन्दिर बनाये जाने का व्यापक आन्दोलन चलाया जा रहा था । उन्हीं दिनों एक बार विश्व हिन्दू परिषद् के अध्यक्ष श्रीअशोक सिंघल के द्वारा द्वारा वृन्दावन में भारत के सभी वरिष्ठ सन्तों-धर्माचार्यों के एक सम्मलेन का आयोजन किया गया था । उस सम्मलेन में मान मन्दिर से श्रीबाबा महाराज को भी आमन्त्रित किया गया था । विश्व हिन्दू परिषद् आदि संगठन चाहते थे कि अयोध्या में राम मन्दिर निर्माण के लिए सन्त समाज का सहयोग, उनका मार्गदर्शन अत्यन्त आवश्यक है, वे ही हिन्दू समाज में संगठन – एकता की भावना जागृत करेंगे, तभी मन्दिर निर्माण का कार्य आगे बढ़ सकता है । वृन्दावन में इसी लक्ष्य के साथ उन्होंने भारत के वरिष्ठ धर्माचार्यों का सम्मलेन आयोजित किया था । उस सम्मलेन में सभी धर्माचार्य मन्दिर निर्माण को लेकर अपने-अपने विचार व्यक्त कर रहे थे । जब श्रीबाबा महाराज के बोलने का समय आया तो सर्वप्रथम उन्होंने हिन्दू समाज की उन्नति में प्रमुख बाधा विघटन, पारस्परिक मनमुटाव-द्वेष की प्रवृत्ति को घातक बताते हुए पारस्परिक सद्भाव, प्रेम, संगठन व एकता की आवश्यकता को बताते हुए श्रीमद्भागवत में सृष्टि रचना के सन्दर्भ में द्वितीय स्कन्ध के श्लोकों को उद्धृत करते हुए कहा –

यदैतेऽसङ्गता भावा भूतेन्द्रियमनोगुणाः । यदाऽऽयतननिर्माणे न शेकुर्ब्रह्मवित्तम ॥

तदा संहत्य चान्योन्यं भगवच्छक्तिचोदिताः । सदसत्त्वमुपादाय चोभयं ससृजुर्ह्यदः ॥ (श्रीभागवतजी २/५/३२,३३)
जब ब्रह्माजी सृष्टि रचना कर रहे थे तो जितने भी सृष्टि के आधारभूत तत्त्व थे, ये पैदा होकर भी सृष्टि नहीं कर पाए क्योंकि इनमें रस नहीं था, प्रेम नहीं था, एकता नहीं थी । जिस प्रकार किसी उद्योगपति ने ५० करोड़ रुपये की फैक्ट्री का निर्माण कर दिया किन्तु उसमें कार्य करने वाले कर्मचारियों में संगठन नहीं था, मजदूरों ने हड़ताल कर दी तो इतने बड़े कारखाने में एक रुपये की वस्तु का भी उत्पादन नहीं हो सका । इसी तरह सृष्टि की रचना के लिए भी पञ्चभूतों, इनके देवताओं में परस्पर एकता की आवश्यकता थी, बिना एकता के तो सृष्टि भी नहीं बन सकती । रस और प्रेम तो भगवान् का स्वरूप है, जब उन्होंने देखा कि सृष्टि की रचना करने वाले सभी आधारभूत तत्त्व उपस्थित हैं, इनके देवता भी हैं, फिर सृष्टि का निर्माण क्यों नहीं हो पा रहा है ? भगवान् तुरन्त ही समझ गये कि इनमें अहंकार है, इनमें से प्रत्येक अपने को बड़ा समझ रहा है, इसीलिए इनके अन्दर पारस्परिक एकता-प्रेम नहीं है और इसीलिए सृष्टिरचना के कार्य में बाधा उत्पन्न हो गयी है । ऐसी स्थिति देखकर भगवान् ही स्वयं इन तत्त्वों और इनके देवताओं के भीतर प्रवेश कर गये और अपनी शक्ति से इन सबको एक कर दिया, इनमें एकता उत्पन्न कर दी । अब तो भगवान् की शक्ति से प्रेरित होकर सभी तत्त्व संगठित हो गये, उनका अहंकार नष्ट हो गया और सभी अपने को छोटा समझकर सृष्टि के रचना में सहयोग करने लगे और इस प्रकार फिर तुरन्त ही बड़ी तीव्र गति से सृष्टि की रचना होने लगी तथा ब्रह्माण्ड का निर्माण हो गया । अब विचार करो कि सृष्टि उत्पन्न करने के लिए समस्त देवता और तत्त्व उत्पन्न हो गये किन्तु भगवत्कृपा के बिना वे आपस में नहीं मिल सके, संगठित नहीं हो सके और बिना संगठन के सृष्टि का निर्माण नहीं हो सका । इसलिए हिन्दू-समाज की प्रगति के लिए, अयोध्या में मन्दिर-निर्माण के लिए हमारे समाज में सर्वप्रथम पारस्परिक प्रेम, एकता व संगठन की बहुत अधिक आवश्यकता है और सबसे पहले इसके लिए ही प्रयास किया जाना चाहिये ।

श्रीबाबामहाराज के वक्तव्य को सुनकर देश के सभी सन्त बहुत प्रभावित हुए, विशेषकर विश्व हिन्दू परिषद् के अध्यक्ष 'श्रीअशोक सिंघलजी' तो इतने अधिक प्रभावित हुए कि वे बिना किसी निमन्त्रण के ही श्रीबाबा से मिलने के लिए मानमन्दिर चले आये और यहाँ आकर उन्होंने कहा कि वृन्दावन के सम्मलेन में देश के बड़े-बड़े सन्त-धर्माचार्य-शंकराचार्य आदि उपस्थित थे किन्तु मुझे इस बात का दुःख था कि ये सभी धर्माचार्य 'राममन्दिर-निर्माण' के सन्दर्भ में हिन्दूसमाज एवं सन्तसमाज में फैली विषमता, वैमनस्य और विघटन को दूरकर पारपरिक प्रेम, सद्भावना और एकता के बारे में तो कुछ भी नहीं कह रहे हैं परन्तु उस सम्मलेन में श्रीबाबामहाराज ही एकमात्र ऐसे सन्त थे जिन्होंने इस विषय पर श्रीमद्भागवत के श्लोक का प्रमाण देते हुए हिन्दू-समाज की एकता हेतु इतनी महत्वपूर्ण बात कही । इसीलिए मैं इनसे मिलने के लिए मानमन्दिर खिंचा चला आया । श्रीबाबामहाराज ने भी 'अशोक सिंघलजी' के नेतृत्त्व में भारत में 'राम-जन्मभूमि-आन्दोलन' चलाने के लिए उनकी प्रशंसा की । श्रीबाबा ने उनके आन्दोलन की सफलता के लिए कहा – अयोध्या में भगवान् राम के मन्दिर के निर्माण हेतु आप पूरे देश भर में जो आन्दोलन चला रहे हैं, वह अत्यधिक प्रशंसनीय कार्य है, मैं चाहता हूँ कि प्रभु श्रीराम आपको अति शीघ्र सफल करें किन्तु आपके इस कार्य की सफलता का जो अचूक मन्त्र है, उसे भी आप सुनें और स्वीकार करें । कलियुग में प्रकट हुए सभी महापुरुषों ने इस युग की भीषण समस्याओं का एकमात्र हल भगवन्नाम को बताया है, स्वयं भी पूरे देश में उन्होंने इसका प्रचार किया । इसलिए आप भी देश में जनता को 'राम मन्दिर आन्दोलन' के विषय में जागरूक करने के लिए जहाँ भी सभा करें तो सर्वप्रथम इस प्रकार भगवन्नाम का कीर्तन किया करें – **'श्रीराम जय राम जय जय राम !!!'** श्रीबाबा ने स्वयं इस प्रकार कीर्तन किया और बाद में श्रीसिंघलजी को भी इसी तरह कीर्तन करने को कहा तो उन्होंने भी 'श्रीराम जय राम जय जय राम' कीर्तन किया । श्रीबाबा ने कहा कि इस प्रकार से आप 'राम नाम' का कीर्तन करते रहेंगे तो शीघ्र ही अयोध्या की समस्या हल होगी और वहाँ प्रभु श्रीराम के भव्य मन्दिर का निर्माण होगा । अशोक सिंघलजी ने श्रीबाबा की आज्ञा का पालन किया और वे आजीवन 'राम नाम' का कीर्तन करते रहे और इसी का परिणाम है कि आज अयोध्या की विकराल समस्या सुलझ चुकी

है और अयोध्या में प्रभु श्रीराम के दिव्य मन्दिर का निर्माण हो गया है । श्रीबाबामहाराज हिन्दू-समाज को निगलने वाले साम्प्रदायिक संकीर्णता के विष से पूर्णतया विहीन हैं और इसीलिए उन्होंने अशोक सिंघलजी से यह नहीं कहा कि आप अपने कार्य की सफलता के लिए युगल मन्त्र अथवा महामन्त्र का कीर्तन करें, श्रीबाबा ने अयोध्या के श्रीराम प्रभु के कार्य की सफलता के लिए उस समय देश भर में लोकप्रिय हो चुके 'श्रीराम नाम' के कीर्तन करने की उन्हें प्रेरणा दी, जिससे समाज में एकता उत्पन्न हो । जिस समय अशोक सिंघलजी श्रीबाबा के पास आये थे, वे अपने गले में एक ऐसी कंठी माला पहने थे, जिनमें सोने के दाने भी थे । श्रीबाबा ने स्वर्ण का उपयोग करने के लिए उन्हें मना किया और बताया कि श्रीमद्भागवत के अनुसार राजा परीक्षित ने कलियुग को चार दोषयुक्त स्थानों के अतिरिक्त स्वर्ण में भी वास करने की अनुमति प्रदान की थी, अतः स्वर्ण में कलियुग का निवास है । आप पूरे देश में भगवान् राम के मन्दिर निर्माण हेतु आन्दोलन चला रहे हैं किन्तु कलियुग सनातन धर्म का शत्रु है, वह इस तरह के कार्यों में विघ्न उपस्थित करने का प्रयत्न करता है । यदि आप गले में स्वर्ण के दानों से निर्मित माला पहनेंगे तो कलियुग निश्चित ही आपके कार्य में बाधक बनेगा, अतः आप इस माला का परित्याग कर दीजिये । श्रीसिंघलजी ने कहा कि भारत के एक प्रसिद्ध सन्त ने मुझे यह माला दी है । श्रीबाबा ने बताया कि कुछ सन्त अपनी प्रसिद्धि के लिए इस प्रकार का ढोंग-पाखण्ड भी करते हैं किन्तु आप उनके प्रभाव में न आयें और कलियुग के प्रकोप से बचने के लिए उनके द्वारा प्रदत्त स्वर्ण की माला का उपयोग न करें । श्रीबाबा के कहने पर श्रीसिंघलजी ने तुरन्त ही अपने गले से वह स्वर्ण मोतियों से युक्त माला को उतार दिया और कहा – 'महाराजजी ! आपकी आज्ञा का मैं पालन करता हूँ । आज से मैं इस माला का उपयोग कभी नहीं करूँगा ।' मान मन्दिर से जाने के बाद अशोक सिंघलजी ने एक बार अमेरिका में कहा था कि भारत में 'श्रीरमेशबाबामहाराज' की तरह समाज के कल्याण के लिए निर्भीकता के साथ ठोस सत्य बात कहने वाला सन्त कोई नहीं है ।

'ब्रज-सीमान्त क्षेत्र' की सुरक्षा

श्रीबाबा ने अखण्ड ब्रजवास करते हुए ब्रजभूमि की उपासना, इसकी सेवा में ही सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया । जिस समय भगवान् श्रीकृष्ण अपनी प्रकट लीला का संवरण करके इस धरा धाम से गमन कर गये, उस समय ब्रज की समस्त लीला स्थलियाँ लुप्त हो चुकी थीं । धर्मराज युधिष्ठिर अपने पौत्र परीक्षित का हस्तिनापुर में एवं श्रीकृष्ण प्रपौत्र वज्रनाभजी का मथुरामण्डल में अभिषेक करके हिमालय पर चले गये थे । एक बार महाराज परीक्षित वज्रनाभजी से मिलने मथुरा गये । उस समय वज्रनाभ ने उनसे कहा कि यद्यपि मैं मथुरामण्डल के राज्य पर अभिषिक्त हूँ, फिर भी मैं यहाँ निर्जन वन में ही रहता हूँ । इस बात का मुझे कुछ पता नहीं कि यहाँ की प्रजा कहाँ चली गयी तथा यहाँ की लीला स्थलियों के बारे में भी मुझे कुछ ज्ञान नहीं है । वज्रनाभ का सन्देह मिटाने के लिए परीक्षित ने महर्षि शाण्डिल्य को बुलवाया, जो पहले नन्द आदि गोपों के पुरोहित थे । उन्होंने वज्रनाभ से कहा कि भगवान् श्रीकृष्ण ने जहाँ जैसी लीला की है, उसके अनुसार उस स्थान का नाम रखकर तुम अनेकों गाँव बसाओ और इस प्रकार दिव्य ब्रजभूमि का भलीभाँति सेवन करते रहो ।

नद्यद्रिद्रोणिकुण्डादिकुञ्जान् संसेवतस्तव ।
राज्ये प्रजाः सुसम्पन्नास्त्वं च प्रीतो भविष्यसि ॥ (स्कन्दपुराण भा. माहा. १/३९)

ब्रज के नदी, पर्वत, घाटी, सरोवर-कुण्ड तथा कुञ्ज-वन आदि का सदा सेवन करते रहो । ऐसा करने से तुम्हारे राज्य की प्रजा बहुत ही सम्पन्न होगी और तुम भी अत्यन्त प्रसन्न रहोगे ।

इस प्रकार देखा जाए तो महर्षि शाण्डिल्य ने वज्रनाभजी को ब्रज के सरोवर, वन, पर्वत और नदी का सेवन करने के लिए कहा था, इसका कारण यही है कि ये ही वे स्थल हैं, जहाँ श्रीराधामाधव ने लीलायें की हैं । बीच-बीच में इन लीला

स्थलियों का लोप भी हुआ तो श्रीजी की कृपा से महापुरुष प्रकट हुए और उन्होंने इन स्थलों की खोज करके इन्हें फिर से बसाया । श्रीबाबा महाराज जब ब्रज में आये तब भी ये लीला स्थलियाँ लुप्त हो रही थीं, नष्ट होती जा रही थीं, श्रीबाबा ने ग्रन्थों में इनके बारे में पढ़ा, इनकी खोज की और इनका संरक्षण करवाया । ब्रज के वन, कुण्ड और पर्वतों को नष्ट होने से बचाया । यमुनाजी, जो अब ब्रज में ही नहीं रहीं, उनको भी ब्रज में लाने का बहुत बड़ा आन्दोलन चलाया । अधिकांश लोगों को ब्रज के बारे में कुछ भी पता नहीं है, वे सोचते हैं कि ब्रज तो केवल चौरासी कोस तक ही सीमित है, जबकि ब्रज तो चौरासी कोस से भी बहुत बड़ा है । इसको बृहद् ब्रज कहते हैं । इसका विस्तृत रूप से वर्णन तो शास्त्रों में है । ब्रज का दर्शन कराने के लिए वृन्दावन से विभिन्न सम्प्रदायों के द्वारा जो ब्रज परिक्रमायें चलाई जाती हैं, वे भी केवल ब्रज के अन्तरंग भागों में जाती हैं, अपने सम्प्रदाय से सम्बन्धित स्थलों में जाती हैं, जहाँ उनके आचार्यों ने भजन किया, जहाँ वे गये । ब्रज का जो सीमावर्ती क्षेत्र है, वर्तमान काल में वृन्दावन के सम्प्रदायों ने उसकी पूर्णतया उपेक्षा कर दी है, वहाँ कोई ब्रजयात्रा नहीं जाती है । ब्रज का यमुना पार का क्षेत्र वृन्दावन के साम्प्रदायिक रूप से संकीर्ण लोगों के द्वारा उपेक्षित कर दिया गया । वहाँ कोई ब्रजयात्रा नहीं जाती है । इसी प्रकार यवन काल के शासकों, विशेषकर औरंगजेब की हिन्दू धर्मस्थानों (देवालय-मन्दिरादि) को नष्ट करने की नीति से ब्रज की बहुत कुछ प्राचीनता (प्राचीन सभ्यता, प्राचीन वेषभूषा) जाती रही । ब्रज के ही बहुत से क्षेत्रों में ब्रजवासियों को मुसलमान बनाया गया । ब्रज का यह हिस्सा मेवात बन गया, मेवात के बढ़ते हुए प्रभाव से यहाँ की लीलास्थलियाँ उपेक्षित और धीरे-धीरे नष्ट ही हो गयीं । वृन्दावन के आधुनिक सम्प्रदायाचार्यों ने इस क्षेत्र को ब्रज ही नहीं माना और संकीर्णवाद के प्रसार से ब्रज संकुचित होता चला गया, परिणाम लीला स्थलों की उपेक्षा होने लगी, जिससे पर्याप्त मात्रा में सामाजिक, धार्मिक क्षति हुई । वास्तविक बृहद् ब्रज के विषय में किसी को कोई शास्त्रीय ज्ञान नहीं है, न तो स्थानीय ब्रजवासियों को और न ही आधुनिक साम्प्रदायिक लोगों को । ज्ञान के अभाव में ऐसे संस्कार लोगों में पड़ गये हैं कि उनकी दृष्टि में ब्रज सीमा पर स्थित सभी स्थल ब्रज के बाहर हैं । ब्रज के अत्यन्त प्राचीन व महत्त्वपूर्ण सीमान्त स्थलों की उपेक्षा की बहुत बड़ी भूल हम लोगों ने की, इसका यह परिणाम हुआ कि सीमावर्ती क्षेत्रों में ब्रजयात्राओं का आना बन्द हो गया । ब्रज का सीमावर्ती क्षेत्र ब्रज के एक अलग भाग के रूप में लोगों के मन-मस्तिष्क में स्थापित कर दिया गया । जबकि गोलोक से पृथ्वी पर सम्पूर्ण धाम का प्राकट्य हुआ, उसकी अनन्त महिमा का एक वाणी द्वारा वर्णन असम्भव है । अब आवश्यकता है कि सीमावर्ती ब्रजवासियों में ये संस्कार डाले जाएँ कि आप ब्रजवासी हो, यह लीला आपके स्थान की है । अच्छा तो रहे कि वहाँ बड़े-बड़े अक्षरों में लीला-इतिहास अंकित हो, जिससे आगे सदियों तक लोग भ्रमित न हों, अपने ब्रजवासी होने के गौरव को न भूलें । इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु सन् २००७ मे श्रीबाबा महाराज द्वारा गहन चिन्तन व अनुसन्धान के बाद प्रथम बार श्रीराधारानी ब्रजयात्रा इन सभी सीमावर्ती क्षेत्रों में आई । उनके ६० वर्षों के निरन्तर अथक प्रयास के बाद लुप्त हो चुके ब्रज के सीमावर्ती क्षेत्रों का पुनर्प्राकट्य हुआ । जब श्रीबाबा ने सीमान्त ब्रज में यात्रा ले जाने की योजना बनायी तो बहुत से लोगों ने उसका विरोध किया, किसी ने कहा कि वह ब्रज है ही नहीं अथवा कुछ ने कहा कि मेवात इलाके में यात्रा ले जाने पर यवनों द्वारा संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, यात्रा लुट सकती है, इस प्रकार के बहुत से भय लोगों ने दिखाए किन्तु श्रीबाबा ने कहा कि हम तो राधारानी के भरोसे चलते हैं, वे ही हमारी यात्रा की रक्षा करेंगी, अब तो कुछ भी हो जाए, सीमान्त ब्रज में यात्रा अवश्य ही जायेगी । सबके विरोध के बावजूद भी १५ हजार यात्रियों के साथ श्रीबाबा सीमान्त ब्रज में प्रथम बार यात्रा को ले गये । जैसी आशंका व्यक्त की जा रही थी, उसके सर्वथा विपरीत सीमान्त ब्रज के ब्रजवासियों ने श्रीबाबा महाराज के नेतृत्त्व में राधारानी ब्रजयात्रा का भव्य स्वागत किया । मेवात क्षेत्र के ब्रजवासी भी अपने क्षेत्र में दीर्घ काल के बाद आई ब्रजयात्रा के स्वागत में उमड़ पड़े, उन सभी को अपार प्रसन्नता हुई । मेवात क्षेत्र का एक मुस्लिम बहुल ग्राम है सिंगार, यवन शासकों के अत्याचार का शिकार यह ग्राम हुआ, जहाँ पर श्यामसुन्दर ने श्रीराधारानी का श्रृंगार किया, अब वहीँ पर अधिकांश हिन्दू ब्रजवासी मुस्लिम बन चुके हैं और जो थोड़े-बहुत हिन्दू बचे हैं, उन्हें अपने क्षेत्र की लीला

का कोई ज्ञान नहीं है । वे अपने को ब्रजवासी भी नहीं समझते, ब्रज के बाहर का समझते हैं । श्रीबाबा ने यात्रा में इन सभी को इनके ग्राम की दिव्य लीला के बारे में बताया और यहाँ के मुस्लिमों से कहा कि मैं आप लोगों को मुस्लिम नहीं समझता, मेरी दृष्टि में तो आप सभी पुरातन ब्रजवासी ही हैं और इसी रूप में आप लोगों को आपके गौरव को बताने के लिए मैं आपके क्षेत्र में आया हूँ । श्रीबाबा ने मेवात क्षेत्र के इन मुस्लिमों से कहा कि आप लोग कट्टरपन्थी विचारधारा से प्रभावित न होकर रसखान जैसे कृष्ण भक्त मुस्लिम को अपना आदर्श समझिये । जुरहरा गाँव के मुसलमानों ने भी हिन्दुओं के साथ राधारानी ब्रजयात्रा का उत्साह के साथ स्वागत किया । पुन्हाना और आली ब्राह्मण जैसे मुस्लिम बहुल ग्रामों के हिन्दू ब्रजवासी श्रीबाबा के नेतृत्त्व में पधारी यात्रा के आगमन से बहुत अधिक हर्षित हुए । श्रीबाबा के आह्वान पर इन सभी क्षेत्र के ब्रजवासियों ने मुस्लिम बहुल क्षेत्र में रहने पर भी प्रभात फेरी निकालना आरम्भ कर दिया । आली ब्राह्मण गाँव, जिसका एक नाम आरी भी है, यह दो गाँवों में विभक्त है, जो हिन्दू बहुल ग्राम है, उसका नाम है आली ब्राह्मण या बामनारी तथा दूसरा गाँव पूरी तरह मुस्लिम आबादी से भरपूर है, इसका नाम है मेवारी । हिन्दुओं की बामनारी चारों ओर कट्टर मुस्लिमों से घिरी हुई है । यह बहुत ही महत्वपूर्ण गाँव है क्योंकि यहाँ महर्षि दुर्वासाजी की तपोस्थली है । 'दुर्वासाजी' श्रीकृष्णलीला के दर्शन हेतु ब्रज के कई स्थानों में रहे थे, उन्हीं में एक है यह आली ब्राह्मण गाँव, यहाँ दुर्वासाजी का एक कुण्ड भी है, जिस पर मुस्लिमों ने जबरन कब्ज़ा कर लिया था । यहाँ के ब्रजवासियों को जब पता चला था कि श्रीबाबा महाराज सीमान्त ब्रज की यात्रा लाने वाले हैं तो ये लोग स्वयं श्रीबाबा से मिलने मान मन्दिर आये थे और उनसे अनुरोध किया था कि हमारे क्षेत्र में मुस्लिमों ने दुर्वासाजी के कुण्ड पर अतिक्रमण कर लिया है और सरकार भी उन्हीं की सहायता करती है, हमारी कोई सुनने वाला नहीं है, इसलिए आप अपनी यात्रा को हमारे गाँव में अवश्य ही लेकर आइयेगा । श्रीबाबा ने उनको आश्वासन दिया था कि आप लोगों के गाँव में तो हम अवश्य ही यात्रा लेकर आयेंगे । जब १५ हजार यात्रियों को लेकर श्रीबाबा इनके गाँव में पहुँचे तो मुस्लिमों ने सोचा कि इतने अधिक हिन्दू आ रहे हैं तो अवश्य ही संघर्ष होगा, इसलिए उन्होंने सरकार के पास शिकायत की । यह क्षेत्र हरियाणा प्रान्त में था और वहाँ कांग्रेस की सरकार थी, उसने मुस्लिमों की शिकायत को देखते हुए भारी पुलिस बल को गाँव में तैनात कर दिया, दंगे की आशंका को देखते हुए वज्र वाहन को भी लाया गया । यहाँ के हिन्दू ब्रजवासी तो इतने अधिक यात्रियों को देखकर बहुत ही उत्साहित हो गये और उन्होंने श्रीबाबा से प्रार्थना की कि आप दुर्वासा कुण्ड के चारों ओर के परिक्रमा मार्ग से होकर चलिए, जहाँ पर मुस्लिमों ने अवैध रूप से कब्ज़ा कर लिया है । वहाँ पर मौलवी के नेतृत्त्व में बहुत से मुस्लिम खड़े हुए थे । श्रीबाबा ने विचार किया कि हम पहली बार मेवात क्षेत्र में ब्रजयात्रा लेकर आये हैं, यदि हिन्दुओं के कहने से हम दुर्वासा कुण्ड की परिक्रमा से होकर चलेंगे तो अवश्य ही विरोधी पक्ष की ओर से टकराव की स्थिति उत्पन्न होगी, यद्यपि हमारी यात्रा में पन्द्रह हजार यात्री हैं और यहाँ के स्थानीय मुस्लिम हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते, फिर भी ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए, जिससे कि हरियाणा सरकार को गलत संदेश पहुँचे, यदि ऐसा हुआ तो अगली बार यहाँ की सरकार मेवात क्षेत्र में हमारी ब्रजयात्रा को प्रवेश करने की अनुमति नहीं देगी और इससे इस क्षेत्र की बहुत बड़ी हानि होगी, इसलिए श्रीबाबा स्थानीय हिन्दुओं के बहुत अनुरोध करने पर भी दुर्वासा कुण्ड की तरफ नहीं गये । उन्होंने मुस्लिमों को साथ लेकर खड़े मौलवी को बुलाया और उससे प्रेम से कहा कि हम लोग आपके क्षेत्र में पहली बार ब्रजयात्रा लेकर आये हैं, लड़ने-झगड़ने के लिए नहीं आये हैं । आप जैसा कहेंगे, वैसा ही हम करेंगे, आपकी क्या इच्छा है, हम लोग दुर्वासा कुण्ड की परिक्रमा करें अथवा नहीं ? श्रीबाबा महाराज की बात को सुनकर मौलवी भी प्रभावित हुआ, वह तो सोच रहा था कि इतने सारे हिन्दुओं को लेकर ये तो हमसे लड़ने के लिए आये हैं किन्तु उनकी प्रेम भरी बात को सुनकर उसे बड़ा ही आश्चर्य हुआ । उसने श्रीबाबा से कहा कि आप कुण्ड के रास्ते से परिक्रमा मत करिए । श्रीबाबा ने कहा कि हम मौलवीजी की बात का सम्मान करते हैं और हम लोग दुर्वासा कुण्ड की परिक्रमा नहीं करेंगे । श्रीबाबा के इस समता भरे व्यवहार को देखकर मौलवी सहित वहाँ के समस्त मुस्लिम समाज पर बहुत प्रभाव पड़ा, यहाँ तक कि हरियाणा सरकार,

जिसे लग रहा था कि कि इतनी अधिक संख्या में हिन्दुओं के आगमन से अवश्य ही यहाँ संघर्ष होगा, उसे भी बड़ा आश्चर्य हुआ । मुस्लिम समाज सहित उसके रक्षक बने हुए पुलिस के सिपाही बड़े ही आश्चर्य के साथ देखते रहे कि किस प्रकार श्रीबाबा ने मौलवी से प्रेम से बात करके शान्ति के साथ पृथक मार्ग से अपनी यात्रा निकाली । श्रीबाबा की शान्ति की इस नीति से वहाँ हिन्दू-मुसलमानों के बीच एक बहुत बड़ा टकराव होने से बच गया । श्रीबाबा के इस व्यवहार ने लड़ने के लिए तैयार मुस्लिम वर्ग के हृदय को जीत लिया और इसका यह प्रभाव हुआ कि अगले वर्ष भी सीमान्त यात्रा को लेकर जब महाराजश्री आली ब्राह्मण गाँव में पहुँचे तो इस बार हजारों मुस्लिमों के साथ वही मौलवी श्रीबाबा के पास आया और बड़े प्रेम से उसने कहा कि महाराजजी ! आप अपने यात्रियों के साथ दुर्वासा कुण्ड की परिक्रमा लगा लीजिये । श्रीबाबा ने फिर भी पूछा कि आप लोगों को इसमें कोई आपत्ति तो नहीं है ? मौलवी ने कहा – 'नहीं महाराजजी ! हम लोगों को कोई आपत्ति नहीं है । बड़े आनन्द के साथ आप अपने यात्रियों के साथ इस मार्ग से होकर चले जाइए ।' श्रीबाबा की समत्व की नीति से उस गाँव में हिन्दू-मुस्लिम में जो वैमनस्य अपनी चरम सीमा पर था, उसमें कमी आई । श्रीबाबा ने वहाँ के हिन्दुओं को समझाया कि कलियुग की भीषण समस्याओं का शास्त्रों ने एक ही निदान बताया है, वह है भगवन्नाम का कीर्तन, इसलिए आप लोग भी हिंसा का मार्ग छोड़कर नाम कीर्तन का आश्रय लीजिये और प्रतिदिन अपने गाँव में प्रभात फेरी करिए, इससे आपकी समस्त समस्याओं का हल हो जाएगा । वहाँ के ब्रजवासियों ने श्रीबाबा की बात को स्वीकार किया और बड़ी ही धूमधाम के साथ वे कीर्तन करते हुए प्रतिदिन प्रभात फेरी चलाने लगे । इसका यह परिणाम हुआ कि दुर्वासा कुण्ड को लेकर लम्बे समय से अदालत में जो मुकद्दमा चल रहा था, उसमें मुस्लिम पक्ष की पराजय हुई और हिन्दू पक्ष विजयी हुआ । इस तरह उस गाँव का इतना अधिक महत्वपूर्ण तीर्थ दुर्वासा कुण्ड, जिसको मुस्लिमों ने जबरन हथिया लिया था, वह हिन्दुओं को पुनः प्राप्त हुआ, आगे चलकर उस कुण्ड का जीर्णोद्धार भी हो गया तथा लोग आज भी उसकी परिक्रमा करते हैं । यह जो इतना बड़ा कार्य सम्भव हुआ, यह सीमान्त ब्रज में श्रीबाबा महाराज द्वारा यात्रा ले जाने के कारण हुआ और उनके बताये हुए मार्ग को अपनाने से ब्रजवासी अपने प्रसिद्ध लीला स्थल को मुस्लिमों के कब्जे से मुक्त कराने में सफल हुए । सीमान्त ब्रज की यात्रा करने से श्रीबाबा ने वहाँ के ब्रजवासियों को उस क्षेत्र की लीला स्थलियों का महत्त्व बताया, उसके संरक्षण की प्रेरणा दी, उन्हें समझाया कि यह मुख्य ब्रज है, आप लोग ब्रजवासी हैं, अपने गौरव को समझिये, कृष्ण भक्ति करिए और अपने क्षेत्र के कल्याण लिए प्रतिदिन नाम कीर्तन करते हुए प्रभात फेरी करिए । श्रीबाबा महाराज के उद्बोधन से सीमान्त ब्रज में विलक्षण जागृति हुई, वहाँ के ब्रजवासी, जो अपने को ब्रजवासी ही नहीं समझते थे, उन्हें पता चला कि हम ब्रजवासी हैं और मुख्य ब्रज में रह रहे हैं तथा वहाँ गाँव-गाँव में बड़े धूमधाम से प्रभात फेरियाँ चलने लगीं ।

'रासवन' की खोज

श्रीबाबा ने ब्रज के लुप्त हो रहे अनेकों लीलास्थलों की खोज की, उनका संरक्षण करवाया और वहाँ ब्रजयात्रा ले जाकर यात्रियों को उन दुर्लभ स्थानों का दर्शन कराया तथा उनका महत्त्व बताया । ऐसे ही स्थलों में एक प्रमुख लीला स्थल है रासौली (रास वन) । श्रीबाबा महाराज ने श्रीजीवगोस्वामीजी की भागवत पर उनकी टीका में रासौली के बारे में पढ़ा, जिसमें उन्होंने वर्णन किया है कि श्यामसुन्दर ने ब्रज में रास का प्रारम्भ रासौली (रासवन) से ही किया था । इसको पढ़कर श्रीबाबा ने इस स्थान की खोज की । पैदल ही वे खोज में निकल पड़े, फिर स्थानीय ब्रजवासियों की सहायता से पता चला कि यह स्थान ग्राम दहगाँव के अन्तर्गत है । श्रीबाबा ने देखा कि रासौली (रास वन) तो अत्यधिक प्राचीन स्थल है, वहाँ पर पुराना जीर्ण-शीर्ण रासमण्डल था और अत्यधिक प्राचीन वृक्ष वहाँ थे किन्तु यह स्थान लुप्त होने की स्थिति में पहुँच चुका था । श्रीबाबा ने अपनी ब्रजयात्रा में भी हजारों यात्रियों को ब्रज के इस प्राचीन और अत्यन्त दुर्लभ स्थान का दर्शन करवाया । यात्रा के दौरान ही दहगाँव के ब्रजवासियों को श्रीबाबा ने इस दुर्लभ स्थल की महिमा से

अवगत करवाया और उन्हें इसके संरक्षण की प्रेरणा दी । श्रीबाबा कई बार इस स्थल पर यात्रा लेकर आते रहे और बारम्बार यहाँ के ग्रामवासियों को इस स्थल की महिमा बताकर इसके संरक्षण हेतु प्रेरित करते रहे । श्रीबाबा के बार-बार प्रेरित करने पर यहाँ के ब्रजवासियों में जागृति हुई और फिर वे अपने इस दुर्लभ स्थल को बचाने में जुट गये । श्रीबाबा ने इसी लक्ष्य से अपने परम कृपापात्र पण्डित श्रीरामजी लाल शर्माजी की भागवत सप्ताह कथा का यहाँ कई बार आयोजन करवाया । उन्होंने भी ग्रामवासियों को रासौली के संरक्षण हेतु प्रेरित किया । इसका परिणाम यह हुआ कि यहाँ के ब्रजवासी तन-मन-धन से अपने लीला स्थल के संरक्षण में जुट गये । अब तो यहाँ बहुत ही सुन्दर नवीन रास मण्डल का निर्माण किया गया है, जिसमें प्रत्येक गोपी के साथ नृत्य करते हुए श्रीकृष्ण की अतीव सुन्दर झाँकी है । बिजली द्वारा ये गोपी-कृष्ण रास मण्डल के चारों ओर घूमते हैं । ऐसा सुन्दर रास मण्डल और उसमें स्वचालित यन्त्रों द्वारा घूमते हुए राधा-माधव एवं गोपीजनों की झाँकी है । रासमण्डल के चारों ओर सघन वृक्षारोपण किया गया है । जल की भी वहाँ बहुत सुन्दर व्यवस्था है ।

श्रीबाबा महाराज जब ब्रजयात्रा में चलते थे तो मार्ग के गाँवों में जहाँ भी स्कूल दिखाई पड़ते तो वे वहाँ के प्रधानाचार्य से पूछते थे कि कक्षा में विद्यार्थियों की उपस्थिति (attendance) अथवा हाजिरी के समय बच्चे क्या बोलते हैं ? अधिकतर सभी विद्यालयों के प्रधानाचार्य यही बताते थे कि उपस्थिति के लिए बच्चे 'यस सर, यस मैडम' कहते हैं । श्रीबाबा उनको समझाते थे कि 'यस सर-यस मैडम' बोलना अंग्रेजी सभ्यता है, यह भारतीय सभ्यता नहीं है । यह ब्रज है, अतः ब्रजवासी बच्चों से आप लोग यस सर-यस मैडम का उच्चारण न करवाकर इनसे 'जय श्रीकृष्ण' अथवा 'जय श्री राधे' का उच्चारण करवाया करें । ऐसा करने से बच्चों के मुख से सहज में ही भगवन्नाम का उच्चारण होगा और इनके हृदय में भक्ति के संस्कार उत्पन्न होंगे । श्रीबाबा महाराज की इस बात को सभी स्कूलों के प्रधानाचार्य स्वीकार कर लेते थे और इस तरह ब्रज के अधिकांश स्कूलों में श्रीबाबा की प्रेरणा के अनुसार बच्चों से उपस्थिति के लिए जय श्रीराधे अथवा जय श्रीकृष्ण का उच्चारण करवाया जाता है । इसी प्रकार श्रीबाबा स्कूल के बच्चों को एक गरीब बालक मोहन की कथा भी सुनाया करते थे, वह जब स्कूल से घर लौटता तो रास्ते में जंगल पड़ता था और सूर्यास्त के बाद अन्धकार हो जाता था । जंगल में हिंसक पशुओं की भयानक आवाजें सुनायी पड़ती थी, उसे सुनकर मोहन को बहुत भय लगता था । मोहन ने जब अपनी माँ को इस बारे में बताया तो माँ ने कहा कि जंगल में तेरा गोपाल भइया रहता है, वह गायें चराता है । जब भी तुझे डर लगे तो अपने गोपाल भइया को पुकारना, वह तेरा भय दूर कर देगा । माँ की बात पर मोहन को विश्वास हो गया और जैसे ही वह स्कूल से घर लौटा, अँधेरा हो गया, जंगली पशुओं की आवाजें सुनायी देने लगीं तो उसे बड़ा भय लगा किन्तु उसे अपनी माँ की बात याद आई, फिर तो उसने विश्वासपूर्वक जोर से पुकारा – 'गोऽऽऽपाऽऽऽल ।' गोपाल नाम पुकारते ही तुरन्त उसके सामने गोपालजी आ गये । वे भगवान् ही थे, वे प्रेम से मोहन का हाथ पकड़कर उसके घर तक छोड़ आये । अब यह प्रतिदिन का क्रम बन गया, गोपालजी रोजाना ही आते और मोहन का हाथ पकड़कर उसके घर छोड़ आते । श्रीगोपालजी का संग पाकर मोहन उनका बहुत बड़ा भक्त बन गया । श्रीबाबा महाराज ब्रज के स्कूल के बच्चों को इस प्रकार मोहन की कथा सुनाकर उनके हृदय में कृष्ण भक्ति के संस्कार जागृत किया करते थे ।

'ब्रजलीला-साहित्य' का प्रकाशन

श्रीबाबामहाराज ने देखा कि वर्तमान काल में वृन्दावन से ब्रज भूमि के बारे में जो भी साहित्य प्रकाशित होता था, उसमें ब्रजभूमि के बारे में विस्तार से उल्लेख नहीं किया जाता था । ब्रज के लीला स्थलों के बारे में विस्तार से वर्णन की जो आवश्यकता थी, उसका उनमें सर्वथा अभाव रहता था, इसका परिणाम यह हुआ कि लोग ब्रज चौरासी कोस के स्थलों के बारे में अधिक नहीं जानते हैं। वृन्दावन में बृहद् ब्रज के बारे तो ग्रन्थ देखने को भी नहीं मिलते हैं । केवल प्राचीन महापुरुषों ने जो लिख दिया, उनके अतिरिक्त आधुनिक काल में ब्रज की लीला स्थलियों के बारे में सविस्तार

वर्णित किये गये ग्रन्थ प्राप्त नहीं होते हैं । इसी कमी को देखते हुए श्रीबाबा महाराज ने सर्वप्रथम ब्रज चौरासी कोस के स्थलों के विस्तार पूर्वक वर्णन हेतु ग्रन्थ 'रसीली ब्रजयात्रा' भाग – १ का निर्माण करवाया । श्रीबाबा राधारानी ब्रजयात्रा में ब्रज से सम्बन्धित प्रामाणिक ग्रन्थों से चौरासी कोस ब्रज के बारे में सविस्तार जो कथा सुनाते थे, उन्हीं के आधार पर इस ग्रन्थ का निर्माण किया गया है । इस ग्रन्थ को श्रीबाबा महाराज की प्रेरणा से मान मन्दिर की ही श्रीबाबा महाराज की परम कृपापात्रा भागवत व्यासाचार्या साध्वी मुरलिका शर्माजी ने लिखा है । ब्रज के सन्दर्भ में ब्रजभूमि के परम उपासक ब्रजाचार्य श्रीनारायण भट्टजी ने अतिशय विस्तारपूर्वक संस्कृत साहित्य का निर्माण किया है । उनके द्वारा रचित एक ग्रन्थ है – 'ब्रज भक्ति विलास' – इसमें श्रीनारायणभट्टजी ने ब्रज के बारे में आर्ष ग्रन्थों से संकलन करके प्रत्येक स्थल के बारे में प्रणाम मन्त्र लिखे हैं । इस ग्रन्थ में ब्रज के वनों, सरोवरों आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है । आधुनिक काल के एक महात्मा श्रीकृष्णदास बाबा ने बड़े परिश्रम के साथ नारायण भट्ट जी के कुछ ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद किया है । श्रीबाबा महाराज ने 'ब्रज भक्ति विलास' ग्रन्थ का गहन अध्ययन किया था और इसी के आधार पर वे ब्रजयात्रा में यात्रियों से सत्संग के बीच में लीला स्थलों को प्रणाम करवाया करते थे । ये प्रणाम मन्त्र भी बड़े ही चमत्कारिक हैं । इस ग्रन्थ में बरसाने को प्रणाम करने का मन्त्र है –

महीभानुसुतायैव कीर्तिदायै नमो नमः । सर्वदा गोकुले वृद्धिं प्रयच्छ मम कांक्षिताम् ॥

अर्थात् – वृषभानुजी व कीर्तिजी को नमस्कार है । गोवंश की सर्वदा वृद्धि हो, ऐसी मेरी आकांक्षा को आप पूर्ण करें ।

राधारानी ब्रजयात्रा का जब बरसाने में दो-तीन दिन तक पड़ाव होता था तो श्रीबाबा महाराज संध्या काल के सत्संग में इसी मन्त्र से यात्रियों को बरसाने को प्रणाम करवाया करते थे । उस समय तक मान मन्दिर की माताजी गोशाला का निर्माण नहीं हुआ था । श्रीबाबा महाराज कहते हैं कि उस समय मेरे मन में गोशाला स्थापित करने का कोई विचार नहीं था, केवल ऊपरी मन से मैं इस मन्त्र के द्वारा बरसाने का प्रणाम मन्त्र बोला करता था किन्तु इसमें जो श्रीराधारानी के माता-पिता कीर्ति-वृषभानुजी से प्रार्थना की गयी है कि गो-कुल अर्थात् गो-वंश की वृद्धि हो, ऐसी मेरी आकांक्षा को आप पूर्ण करें तो इसका यह चमत्कार हुआ कि यहाँ भारत की सबसे बड़ी गोशाला का निर्माण हो गया, जहाँ आज ६५ हजार से अधिक गोवंश का पालन हो रहा है । ऐसा अद्भुत ग्रन्थ है 'ब्रज भक्ति विलास' । इसको कोई जानता तक नहीं था और श्रीबाबा ने ऐसे ग्रन्थ का ब्रज यात्रा के माध्यम से प्रचार किया और ग्रन्थ रसीली ब्रजयात्रा भाग-१ में इसके प्रणाम मन्त्रों को संकलित किया गया है । ब्रज चौरासी कोस के लीला स्थलों से सम्बन्धित ग्रन्थ का निर्माण तो हो गया किन्तु अब श्रीबाबा ने वृहद् ब्रज के बारे में ग्रन्थ रचना की आवश्यकता को समझा । अधिकतर लोग चौरासी कोस के ही ब्रज को ब्रज मानते हैं किन्तु वस्तुतः ब्रज तो चौरासी कोस से भी बहुत बड़ा है, इसका प्रमाण शास्त्रों में दिया गया है । वायुपुराण में वसिष्ठजी व दिलीप के सम्वाद में वर्णित है –

चत्वारिंशद् योजनानां ततस्तु मथुरा स्मृता । यत्र देवो हरिः साक्षात् स्वयं तिष्ठति सर्वदा ॥

४० योजन (१६० कोस) तक विस्तृत मथुरा मण्डल है, यहाँ सर्वदा श्रीहरि विद्यमान रहते हैं । वृहद् ब्रज के बारे में समाज को कुछ भी पता नहीं है । इसलिए श्रीबाबा महाराज चाहते थे कि इससे सम्बन्धित ग्रन्थ का प्रकाशन मान मन्दिर से हो । ब्रजाचार्य श्रीनारायण भट्ट जी द्वारा ब्रज के सन्दर्भ में रचित एक ग्रन्थ है – 'बृहद् ब्रज गुणोत्सव' – इस ग्रन्थ में ब्रज के हजारों गाँवों में हुई श्रीकृष्ण लीला का वर्णन किया गया है किन्तु बड़े ही दुर्भाग्य का विषय है कि यह ग्रन्थ अब उपलब्ध नहीं है, लुप्त हो चुका है । श्रीबाबामहाराज के द्वारा इस ग्रन्थ की खोज का बहुत प्रयास किया गया । इस ग्रन्थ को खोज कर लाने वाले को श्रीबाबामहाराज की ओर से एक लाख रुपये का पुरस्कार देने की भी घोषणा हुई परन्तु इस ग्रन्थ का कुछ भी पता नहीं चल सका । बृहद् ब्रज पर पुस्तक लिखने से पूर्व श्रीबाबा महाराज की प्रेरणा से मान मन्दिर की टीम ने मथुरा-वृन्दावन के पुस्तकालयों से आचार्यों द्वारा लिखित ग्रन्थों का संकलन किया तथा बृहद् ब्रज क्षेत्र के गाँवों का दौरा किया, लीला स्थलों की खोज की, उनके बारे में अनुसन्धान किया । श्रीरूप गोस्वामीजी द्वारा रचित ग्रन्थ 'मथुरा

माहात्म्य' एवं राधावल्लभ सम्प्रदाय के आचार्य चाचा श्रीवृन्दावनदासजी द्वारा रचित ग्रन्थ 'प्राचीन ब्रज परिक्रमा' एवं अन्य प्रामाणिक ग्रन्थों के आधार पर 'रसीली ब्रज यात्रा भाग-२' का प्रणयन किया गया । इस ग्रन्थ में बृहद् ब्रज के लीला स्थलों के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है । इस ग्रन्थ में श्रीबाबा की प्रेरणा से आधुनिक वैष्णव समाज, रसिक समाज में व्याप्त विकृतियों एवं उनको दूर करने के लिए बहुत से सैद्धान्तिक लेख भी लिखे गये हैं जैसे सम्प्रदाय, अनन्यता, ब्रज और निकुञ्ज में भेद तथा भागवत धर्म में सर्वाधिकार । इन ग्रन्थों की रचना के द्वारा श्रीबाबा ने ब्रज के जिज्ञासु ब्रज भक्तों के ऊपर बहुत बड़ा उपकार किया है । ब्रज चौरासी कोस एवं बृहद् ब्रज के सम्बन्ध में अनभिज्ञ ब्रज प्रेमी समाज को इन ग्रन्थों से बहुत बड़ा अवलम्बन मिल गया है ।

श्रीबाबामहाराज जब प्रथम बार ब्रज में आये तो उन्हें गह्वरवन में निम्बार्क सम्प्रदाय के आश्रम गोपाल कुटी में बरसाने के सिद्ध महापुरुष श्रीवंशीअलीजी द्वारा रचित ग्रन्थ वृषभानुपुर शतक का पुराना गुटका मिला था । वंशी अलीजी आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व हुए थे, वे बरसाने में ही रहते थे, श्रीजी एवं बरसाने में उनकी अनन्य निष्ठा थी । उन्होंने बरसाने की महिमा के बारे में संस्कृत में वृषभानुपुर शतक की रचना की थी, जिसमें सौ श्लोकों में बरसाना-गह्वरवन की महिमा का उल्लेख किया गया है । जब श्रीबाबा गह्वरवन में आये तो यह दुर्लभ ग्रन्थ भी लुप्त हो गया था । गोपाल कुटी में इस ग्रन्थ के पुराने हस्त लिखित गुटके की एक प्रतिलिपि श्रीबाबामहाराज को उपलब्ध हुई, जिसमें केवल पचास श्लोक ही थे । श्रीबाबा ने स्याही की दवात में पुराने जमाने के कलम को भिगोकर अपनी डायरी में पचास श्लोक लिख लिए । शेष पचास श्लोक उपलब्ध नहीं हो रहे थे तो बाबाश्री ने मान मन्दिर के प्रबन्धक श्रीराधाकान्त शास्त्री (भइयाजी) से कहा कि इस पूरे ग्रन्थ की खोज करो । भइयाजी ने खोज की तो पता चला कि श्रीवंशीअलीजी के ललित सम्प्रदाय का मुख्य स्थान जयपुर में है । वहाँ के गोस्वामीजी से भइयाजी ने फोन से बात की तो उन्होंने बताया कि हमारे सम्प्रदाय के मूल आचार्य श्रीवंशी अलीजी द्वारा लिखित सम्पूर्ण वृषभानुपुर शतक ग्रन्थ हमारे स्थान में है । भइयाजी ने उनको बताया कि हमारे गुरुदेव श्रीबाबा महाराज इस ग्रन्थ का हिन्दी में अनुवाद करवाना चाहते हैं तो आप मूल ग्रन्थ भेजने की कृपा करें । भइयाजी के अनुरोध पर गोस्वामीजी ने सम्पूर्ण वृषभानुपुर शतक ग्रन्थ डाक द्वारा निःशुल्क ही मान मन्दिर भेज दिया । अब तक यह ग्रन्थ लोगों की पहुँच के बाहर था क्योंकि इसका अब तक कोई हिन्दी अनुवाद प्रकाशित नहीं किया गया था । श्रीबाबा महाराज ने संस्कृत के एक वरिष्ठ विद्वान के द्वारा इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद करवाकर इसका मान मन्दिर सेवा संस्थान से प्रकाशन करवाया । इस तरह यह दुर्लभ ग्रन्थ, जो लगभग लुप्तप्राय ही हो चुका था, श्रीबाबामहाराज के द्वारा इसका प्रकाशन हुआ और मानमन्दिर में यह उपलब्ध है, कोई भी इसको लेकर पढ़ सकता है ।

मंगलमूल-प्रेरणा-प्रदायक 'बाबाश्री'

श्रीबाबामहाराज से मिलने के लिए देश के ख्याति प्राप्त लोग मान मन्दिर आते रहते हैं । अनेकों नेता भी उनके दर्शन करने के लिए आया करते हैं । जिस समय बिहार के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री लालू प्रसाद यादव केन्द्र सरकार में रेल मन्त्री थे, वे भी श्रीबाबा का दर्शन करने के लिए मान मन्दिर में आये । उस समय उनके ऊपर बिहार में मुख्य मन्त्री पद पर रहते समय चारा घोटाले का आरोप भी लगा हुआ था । उन्हीं दिनों श्रीबाबा महाराज के द्वारा ब्रज के पर्वतों के संरक्षण का भी आन्दोलन जोर-शोर से चलाया जा रहा था । जब लालूजी श्रीबाबा के पास आये तो उन्होंने पूछा कि आप अपने घर में भगवान् की उपासना से सम्बन्धित कुछ नित्य कर्म करते हैं कि नहीं ? लालू जी ने कहा कि हाँ, मैं भगवान् की आराधना करता तो हूँ किन्तु प्रतिदिन नहीं करता हूँ । श्रीबाबा ने उन्हें समझाया कि आज से संकल्प करिए कि भगवान् की उपासना प्रतिदिन कीजिये, भले ही पाँच मिनट को करें किन्तु प्रतिदिन करें और इस प्रकार करें कि चाहे कितनी भी विघ्न-बाधा आये, आँधी-तूफ़ान आ जाये परन्तु अपनी पाँच मिनट की उपासना को दृढ़तापूर्वक करें, उसको कभी न छोड़ें । श्रीबाबा ने उन्हें यह भी बताया कि भगवान् के द्वारा संचालित प्रकृति के सारे कार्य भी अपने नियमित समय पर प्रतिदिन होते हैं जैसे सूर्य नियम से प्रतिदिन उदय होता है, नियम से अस्त होता

है । कभी ऐसा नहीं हुआ कि सूर्य किसी दिन अपने नियत समय से पहले अथवा देर में उदित और अस्त हो अथवा किसी दिन उदय ही न हो । इसी प्रकार हमारे शरीर के सभी अंग नियमित रूप से निरन्तर कार्य करते रहते हैं । चाहे हृदय की धड़कन हो, शरीर में रक्त का संचारण हो अथवा अन्य दूसरे कार्य हों, ऐसा कभी नहीं होता कि थोड़ी देर के लिए धड़कन विराम ले ले अथवा रक्त का परिसंचरण एक सेकण्ड को भी रुक जाए । प्रकृति के सभी कार्य नियमित रूप से प्रतिदिन होते हैं, इसी प्रकार हम भी जो कार्य प्रतिदिन नियम से करते हैं तो उसमें चमत्कार होता है जैसे यदि आप भगवान् की उपासना प्रतिदिन नियमित रूप से करेंगे तो उसमें भी चमत्कार होगा किन्तु कभी उपासना करें, कभी न करें, कभी दो-चार दिन बाद करें तो उससे चमत्कार नहीं होता है । श्रीबाबा के इस प्रकार समझाने पर लालूजी ने कहा कि आज से मैं भगवान् की उपासना प्रतिदिन ही करूँगा । इसके अतिरिक्त लालूजी ने श्रीबाबा से कहा कि आप मेरे योग्य कोई सेवा बताइए तो उन्होंने कहा कि यदि आप सेवा कर सकते हैं तो आप इस समय भारत सरकार के रेल मन्त्री हैं और हम लोग ब्रज भूमि की सेवा के प्रति समर्पित हैं । इस समय ब्रज में शक्तिशाली खनन माफियाओं के द्वारा धन के लोभ से ब्रज के धार्मिक महत्त्व के पर्वतों का व्यापक रूप से खनन किया जा रहा है और राजस्थान में जो सरकार है, वह उन्हें खुलकर समर्थन दे रही है । आप इतना करें कि ब्रज के पर्वतों का जो विनाश हो रहा है, उसको प्रतिबन्धित करवाने में हमारा सहयोग कीजिए । लालूजी ने श्रीबाबा से कहा कि मैं देश की संसद में इस विषय को प्रमुखता से उठाकर राजस्थान में कार्यरत विपक्षी पार्टी पर पूरा दबाव डालूँगा, जिससे कि वह ब्रज के पर्वतों के खनन को पूर्ण रूप से बन्द करवाए । लालूजी ने श्रीबाबा को जो वचन दिया, उसको निभाया भी और उन्होंने भारत की संसद में इस मामले को प्रमुखता से उठाते हुए कहा कि एक पार्टी जो अपने को धार्मिक एवं धर्म का संरक्षक कहती है तथा पूरे देश में धर्म के नाम से वोट माँगती है, वही पार्टी आज धन के लोभ से ब्रजभूमि में धार्मिक महत्त्व के पर्वतों का बड़े पैमाने पर खनन करवा रही है । उन्होंने कहा कि मैं स्वयं ब्रज में गया हूँ, मैंने बरसाने में देखा कि वहाँ के प्रसिद्ध सन्त श्रीरमेशबाबा महाराज, जो एक पहाड़ी पर रहते हैं, वे अकेले ही ब्रज के पर्वतों की रक्षा हेतु इस सरकार के विरुद्ध संघर्ष कर रहे हैं और धर्म के नाम पर बनी यह सरकार उनके विरुद्ध कार्य करके ब्रज के पर्वतों के विनाश में जुटी हुई है तथा खनन माफियाओं का सहयोग कर रही है । इससे उस समय ब्रज के पर्वतों के खनन को रोकने के सम्बन्ध में भारी दबाव पड़ा ।

एक बार सुषमा स्वराज ब्रज में आयीं और श्री बाबा महाराज से मिलने मान मन्दिर भी आयीं । उस समय श्रीबाबा महाराज का गह्वर वन में संध्या काल का सत्संग हो रहा था और वे मीराबाई का पद गा रहे थे । श्रीबाबा की मीराजी में अगाध आस्था है । उन्होंने सुषमा स्वराज से कहा कि आपको अपना ध्यान भक्ति में केन्द्रित करना चाहिए । मीराजी के समय चित्तौड़ के राजाओं ने उनकी भक्ति में बहुत विघ्न उपस्थित किये, उन्हें कई बार जान से मारने के प्रयास किये किन्तु मीराजी ने कभी नहीं कहा कि चित्तौड़ के राजा अब ये लोग नहीं बनेंगे, इनके राजा होने का मैं विरोध करूँगी । मीराजी तो सदा कृष्ण गुण गाकर अपने गिरधर गोपाल की आराधना में डूबी रहीं और कोई भी उनका एक बाल भी बाँका नहीं कर पाया, इसी प्रकार आप भी किसी पर आक्रोश मत व्यक्त करिए, प्रभु की आराधना में जीवन को समर्पित कीजिये, यही सच्चा मार्ग है ।

एक बार उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्य मन्त्री श्रीआदित्यनाथ योगीजी बरसाने की होली देखने के लिए हेलीकॉप्टर से बरसाना आये, उनके साथ हरियाणा के मुख्य मन्त्री भी थे । योगीजी के साथ आये एक मन्त्री ने उनसे कहा कि यहाँ एक प्रसिद्ध सन्त श्रीरमेशबाबाजी महाराज रहते हैं और उन्होंने बरसाने में एक बहुत बड़ी गोशाला का निर्माण किया है, जिसमें हजारों गोवंश का पालन होता है । गोभक्त श्रीयोगीजी ने इस बात को सुनकर कहा कि होली का कार्यक्रम मैं बाद में देखूँगा, पहले बाबा महाराजजी की गोशाला को देखूँगा । योगीजी गोशाला देखने माताजी गोशाला में पहुँचे, वहाँ इतनी अधिक संख्या में गायों को देखकर वे बहुत ही प्रसन्न हुए, उन्होंने गायों की सेवा को देखा एवं जिस तरह से यहाँ गोसेवा होती है, उसकी उन्होंने भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा कहा कि मुझे तो पता ही नहीं था कि मेरे उत्तर प्रदेश में इतनी बड़ी गोशाला है और इतने उत्कृष्ट ढंग से उनकी सेवा की जाती है । योगीजी श्रीबाबा महाराज से भी मिले । श्रीबाबा ने योगीजी को बताया कि एक राजा अथवा शासक को कैसा होना चाहिए, इसके लिए उन्होंने विक्रमादित्य का उदाहरण देते हुए कहा कि विक्रमादित्य एक आदर्श राजा हुआ है, यवनों के शासन से पहले

उसका राज्य भारत में था । वह एक धार्मिक, न्यायप्रिय राजा था । एक आदर्श राजा अथवा शासक के सारे गुण उसमें विद्यमान थे । इसके बाद श्रीबाबा ने हर्षवर्धन का भी उदाहरण दिया कि वह भी बड़ा योग्य और उदार राजा था । वह इतना बड़ा दानी था कि जब प्रयाग के कुम्भ में आता था तो अपना सर्वस्व याचकों को दान में दे देता था, अपने वस्त्र भी दान कर देता था । उस समय उसकी बहन उसे वस्त्र पहनने के लिए देती थी । श्रीबाबा की यह बात सुनकर योगीजी बहुत प्रभावित हुए, फिर उन्होंने श्रीबाबा से पूछा कि गौसेवा में कोई समस्या हो तो बताइए । श्रीबाबामहाराज किसी से याचना नहीं करते हैं, इसलिए उन्होंने प्रदेश के इतने बड़े प्रभावशाली मुख्य मन्त्री के कहने पर भी उनसे किसी प्रकार के आर्थिक सहयोग की याचना नहीं की । 'श्रीमाताजी गौशाला' में गोवंश एवं श्रीबाबामहाराज का दर्शन करके योगीजी बहुत प्रसन्न हुए और इसके बाद वे वृन्दावन में गये । वृन्दावन में एक बहुत बड़े सम्मलेन में उन्होंने कहा कि वास्तव में भारत में कोई आदर्श सन्त हैं तो वे हैं बरसाने के श्रीरमेशबाबा महाराजजी, उनके यहाँ इतनी अधिक संख्या में गौवंश की सेवा हो रही है, ऐसा भारत में कोई सन्त नहीं कर रहा है । दूसरी बार योगीजी पुनः २०१८ में माताजी गौशाला का दर्शन करने पधारे थे, उस समय उन्होंने वहाँ स्थापित गोबर गैस प्लान्ट एवं गौवंश के उपचार के लिए निर्मित विशाल गो चिकित्सालय का उद्घाटन किया था ।

एकबार ब्रज के सन्तों द्वारा सूरश्याम गौशाला, चन्द्रसरोवर, गोवर्धन में वृहद् स्तर पर गौरक्षा हेतु एक सन्त सम्मलेन आयोजित किया गया था । उस सम्मलेन में ब्रज के सभी प्रसिद्ध सन्त एवं देश के ख्याति प्राप्त कथा वाचक श्रीमुरारी बापू भी पधारे थे । श्रीबाबा ने उस सम्मलेन में सभी सन्तों के समक्ष अत्यन्त निर्भीकता के साथ कहा था कि प्रत्येक सन्त को चाहिए कि अपने आश्रम में गायों को रखे और उनकी सेवा करे । जब तक हम लोग स्वयं गो सेवा नहीं करेंगे और केवल जनता से गौसेवा करने की कहेंगे तो जनता क्या सीखेगी ? व्यवहारिक रूप से स्वयं गो सेवा किये बिना केवल सम्मलेन आदि करते रहने से, केवल भाषण देने से कोई लाभ नहीं होगा । श्रीबाबा ने गोस्वामी तुलसीदासजी कृत रामायण से जो दोहे और चौपाइयाँ कहे, उनको सुनकर राम कथा के यशस्वी वाचक श्रीमुरारीबापू बहुत ही प्रभावित हुए और उन्होंने कहा कि जीवन भर मैंने राम कथा कही किन्तु श्रीबाबा महाराज ने जो रामायण की गूढ़ चौपाइयाँ व दोहे कहे, उनकी तरफ तो कभी मेरा ध्यान भी नहीं गया था । उन्होंने कहा कि वास्तव में श्रीबाबा जैसा फक्कड़ सन्त मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा । इसके बाद मुरारीबापूजी श्रीबाबा से मिलने मानमन्दिर भी पधारे और जब भी उनका ब्रज में कथा का कार्यक्रम होता है तो वे बाबामहाराज से मिलने मानमन्दिर अवश्य ही आते हैं ।

एक बार बरसाना एवं नन्दगाँव के बीच स्थित ग्राम संकेत में ब्रजाचार्य श्रीनारायण भट्टजी द्वारा प्रकटित अष्ट धातु के ठाकुर श्रीराधारमणजी के विग्रह को चोरों ने मन्दिर से चुरा लिया । गाँव के लोग दुखी होकर श्रीबाबा महराज के पास आये और अपनी व्यथा व्यक्त की । श्रीबाबा ने उनसे कहा कि कलियुग की समस्त समस्याओं का निदान शास्त्रों ने भगवन्नाम कीर्तन को बताया है । इसलिए आप लोग भी मन्दिर में अखण्ड कीर्तन का आयोजन करके निरन्तर कीर्तन करो । इससे आपकी समस्या हल होगी । एक बार हमारे मन्दिर के श्रीराधा मानबिहारी लाल जी के श्रीविग्रह को भी एक चोर चुराकर बंगलादेश ले गया था किन्तु उस समय मान मन्दिर में अखण्ड कीर्तन किया गया, कीर्तन के प्रभाव से पन्द्रह दिन के भीतर ही चोर पकड़ा गया तथा ठाकुरजी वापस मान मन्दिर में आ गये, इसलिए आप लोग भी कीर्तन कीजिये । ग्रामवासियों ने कहा कि इस समय खेतों में हमारी फसल काटने का कार्य चल रहा है और हम सभी लोग उसमें व्यस्त हैं, ऐसी स्थिति में हम लोग अखण्ड रूप से कीर्तन करने में असमर्थ हैं । संकेत ग्राम वासियों की ऐसी स्थिति देखकर श्रीबाबा महाराज ने मान मन्दिर के साधुओं एवं साध्वियों से कहा कि हम लोग तो ब्रज की सेवा हेतु ही ब्रजवास कर रहे हैं और संकेत ग्राम में श्रीनारायण भट्ट जी द्वारा प्रकटित श्रीराधारमणजी के श्रीविग्रह की चोरी हो गयी है । यह श्रीविग्रह बहुत ही दुर्लभ है, आचार्य द्वारा सेवित एवं प्रकटित है, गाँव वाले खेती के कार्य के कारण अखण्ड कीर्तन करने में असमर्थ हैं, इसलिए आप लोग दिन में संकेत ग्राम में जाकर अखण्ड कीर्तन कीजिये । श्रीबाबा महाराज की आज्ञा से मान मन्दिर के सन्त मन्दिर की गाड़ी से सुबह ही संकेत चले जाते, दिन भर वहाँ कीर्तन करते और कीर्तन करते हुए ही गाँव में भिक्षा भी माँगते थे, शाम को वे लोग मान मन्दिर वापस आ

जाते थे । इसी प्रकार श्रीबाबा ने मान मन्दिर की साध्वियों से भी संकेत में कीर्तन करते हुए भिक्षा माँगने को कहा । श्रीबाबा ने साध्वियों से कहा कि तुम लोग भिक्षा के लिए संकेत के घर-घर में कीर्तन करते हुए जाओ और घर-घर में वहाँ की स्त्रियों से कहो कि आप लोग भी अपने ठाकुरजी की प्राप्ति के लिए कीर्तन करो । श्रीबाबा की प्रेरणा से मान मन्दिर की साध्वियों ने भी संकेत में कीर्तन करते हुए घर-घर से भिक्षा माँगी तथा वहाँ की स्त्रियों को भी जागृत करने का प्रयास किया, उनसे कीर्तन करने का अनुरोध किया । इन साध्वियों का यह प्रयत्न सफल हुआ और संकेत की देवियाँ भी घर-घर में कीर्तन करने लगीं । कुछ वर्ष बाद चोर पकड़े गये और ठाकुरजी की प्राप्ति हो गयी । पुलिस ने चोरों से राधारमणजी के श्रीविग्रह बरामद करके अपने पास बरसाने के थाने में रखे और संकेत वासियों को सूचना न देकर मान मन्दिर में फोन किया कि संकेत के ठाकुरजी हमें मिल गये हैं, आप लोग थाने में आकर उन्हें ले जाइए । इससे यह भी पता चलता है कि मान मन्दिर का ब्रज में कितना प्रतिष्ठित व प्रभावशाली स्थान है कि पुलिस ने ठाकुरजी के श्रीविग्रह चोरों से बरामद करके संकेत ग्रामवासियों को इसकी सूचना न देकर मान मन्दिर में इसकी सूचना दी और कहा कि आप लोग ठाकुरजी को ले जाइए । पुलिस की सूचना पाकर मान मन्दिर के व्यवस्थापक बरसाना के थाने में पहुँचे और उन्होंने संकेत वासियों को भी ठाकुरजी के मिलने की सूचना दे दी तथा उनसे कहा कि आप लोग बरसाना आकर अपने ठाकुरजी को ले जाओ । संकेतवासी अपने ठाकुरजी के प्राप्त होने की सूचना पाकर आनन्द में डूब गये और फिर वे सभी बरसाना थाने में पहुँचे तथा फिर एक बड़ी शोभा यात्रा के साथ ठाकुरजी को लेकर कीर्तन करते हुए सभी ने बरसाने की परिक्रमा की । इसके बाद ठाकुर श्रीराधारमणजी को संकेत में ले जाकर मन्दिर में विराजित कर दिया गया और एक दिन बड़े ही धूमधाम के साथ उनका अभिषेक किया गया । इस प्रकार श्रीबाबा महाराज के द्वारा कीर्तन की साधना के द्वारा ब्रज के इतने अधिक महत्वपूर्ण श्रीविग्रह की चोरी होने के बाद भी पुनः प्राप्ति हो गयी ।

एक बार एक अन्तर्राष्ट्रीय टी. वी. चैनल 'डिस्कवरी चैनल' वाले श्रीबाबा महाराज का इन्टरव्यू लेने के लिए मान मन्दिर आये । उन्होंने श्रीबाबा से प्रश्न किया कि हमने सुना है कि आपने ब्रज में बड़े-बड़े कार्य किये हैं, ब्रज के कई कुण्डों का जीर्णोद्धार करवाया, आपके यहाँ से प्रति वर्ष एक ब्रजयात्रा भी निःशुल्क चलती है, जिसमें देश भर से पन्द्रह हजार से अधिक लोग सम्मिलित होते हैं । क्या इनके अलावा भी कुछ अन्य कार्य ब्रज में आप करेंगे ? श्रीबाबा ने कहा कि इनके अतिरिक्त यमुनाजी को ब्रज में लाना भी मेरी कार्य सूची में है । इन्टरव्यू करने वाले ने पूछा कि इसके बाद आप क्या करेंगे ? श्रीबाबा ने कहा मेरी योजना तो यह है कि गंगाजी का भी प्रदूषण समाप्त हो, गंगा पुनः स्वच्छ नदी बने, अयोध्या में राम मन्दिर का निर्माण हो और कश्मीर की समस्या हल हो । इन्टरव्यू वाले ने पूछा – 'इतने बड़े-बड़े कार्य आप करना चाहते हैं तो इसके लिए तो बहुत अधिक धनराशि की आवश्यकता होगी, अतः यह बताइए कि आपके पास धन अर्जित करने का क्या स्रोत है ?' श्रीबाबा ने उत्तर दिया – 'धन तो मैं रखता ही नहीं हूँ और न ही किसी से धन की याचना करता हूँ । मेरे पास केवल एक ही आधार है और वह है भगवान् के नाम का कीर्तन । भगवान् के नाम कीर्तन के बल पर ही मेरे सभी कार्य सम्पन्न होते हैं और भविष्य में भी सभी कार्य केवल नाम संकीर्तन से ही सम्भव होंगे ।' श्रीबाबा की बात सुनकर चैनल वालों को विश्वास ही नहीं हुआ और उन्होंने बड़े आश्चर्य से कहा कि केवल भगवान् के नाम कीर्तन के बल पर आप सभी कार्यों को कैसे कर पायेंगे ? श्रीबाबा ने कहा कि हमारे धर्मशास्त्रों में ऐसा कहा गया है कि भगवान् के नाम में अनन्त शक्ति है और उसके बल पर सभी असम्भव कार्य भी सिद्ध हो जाते हैं, भगवन्नाम के बल पर तो मनुष्य मृत्यु को भी जीत सकता है । आज तक मैंने मान मन्दिर में जो भी कार्य किये, वे केवल नाम कीर्तन के बल पर ही हो सके हैं, इसलिए मुझे पूर्ण विश्वास है कि भगवान् के नाम के आश्रय से भविष्य के भी सभी कार्य पूर्ण होंगे । श्रीबाबा महाराज मान मन्दिर के आराधना भवन रस मण्डप में प्रतिदिन संकीर्तन आराधना करते हैं और उस संकीर्तन का ही यह प्रताप है कि आज गंगाजी का भी प्रदूषण काफी हद तक समाप्त हुआ है, गंगा में स्वच्छता आई है । अयोध्या में राम मन्दिर का निर्माण हो चुका है और कश्मीर की विकराल समस्या हल हो चुकी है ।

एक भरोसो एक बल एक आस बिस्वास ।
एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास ।।

श्रीकृष्णप्रेम की परिधि 'ब्रह्मचारिणी बालिकाएँ'

श्रीबाबामहाराज के द्वारा सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य जो हुआ है, वह है कन्याओं को विरक्त बनाकर उन्हें अनन्य भाव से भगवद्भक्ति में समर्पित करना । आध्यात्मिक समाज में स्त्रियों को पूर्ण रूप से भक्ति में लगाने का कार्य अभी तक बहुत ही कम हुआ है । शास्त्रों में स्त्रियों के लिए सती धर्म की महत्ता प्रतिपादित करके उन्हें पति की सेवा करना ही सबसे बड़ा कर्त्तव्य बताया गया है । स्वयं ब्रजगोपियाँ जब महारास में श्यामसुन्दर द्वारा वंशी वादन करने पर अपने सभी कर्मों को छोड़कर उनके पास दौड़कर पहुँचीं तो श्रीमद्भागवत के अनुसार भी श्रीकृष्ण ने ब्रजदेवियों की परीक्षा हेतु उन्हें सती धर्म की शिक्षा दी थी और घर वापस लौटकर अपने पति एवं उसके परिवार वालों की सेवा करने के लिए कहा था । उस समय ब्रजगोपिकाओं ने श्रीकृष्ण के उपदेश का खण्डन किया और इस प्रकार से सती धर्म का ही खण्डन करके भागवत धर्म की महिमा का प्रतिपादन करते हुए बताया कि शास्त्रों के सभी वचनों, समस्त उपदेशों के चरम लक्ष्य तुम्हीं हो । तुम आत्माओं की भी आत्मा हो, तुम्हीं कान्त (प्रियतम) हो, संसारी पति कभी भी आत्मा नहीं हो सकता ।

यत्पत्यपत्यसुहृदामनुवृत्तिरङ्ग स्त्रीणां स्वधर्म इति धर्मविदा त्वयोक्तम् ।
अस्त्वेवमेतदुपदेशपदे त्वयीशे प्रेष्ठो भवांस्तनुभृतां किल बन्धुरात्मा ॥
कुर्वन्ति हि त्वयि रतिं कुशलाः स्व आत्मन् नित्यप्रिये पतिसुतादिभिरार्तिदैः किम् ।

(श्रीभागवतजी १०/२९/३२, ३३)

हे कृष्ण ! संसार में जो कुशल स्त्रियाँ होती हैं, वे तुमसे ही प्रेम करती हैं क्योंकि तुम नित्य प्रिय हो, आत्मा हो, जबकि पति-पुत्रादि से तो कष्ट ही मिलता है । गोपियाँ सबसे बड़ी कृष्ण भक्त हुई हैं, उन्होंने वेदोक्त आर्य धर्म का परित्याग कर दिया, जिसके अनुसार पातिव्रत धर्म को ही स्त्री के लिए सर्वश्रेष्ठ बताया गया है, इसीलिए संसार की बड़ी से बड़ी सती भी गोपियों की समानता नहीं कर सकती । ब्रह्मा, शिव, नारद, सनकादिक और उद्धव आदि सभी ब्रजगोपियों की चरण रज की याचना करते हैं । गोपिकावतार श्रीमीराबाई ने भी पातिव्रत-धर्म का खण्डन करते हुए कृष्णप्रेम को श्रेष्ठ बताया है –

ऐसे वर को कहा वरूँ जो जन्मे और मर जाए, वर तो वरूँ मैं साँवरो म्हारो चुड़लो अमर ह्वै जाए ।

इस तरह भागवत धर्म ही हर तरह से पातिव्रत धर्म से बड़ा है और इसीलिए श्रीबाबामहाराज भी सभी को भागवत धर्म अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं । श्रीबाबा किसी को अपना शिष्य-शिष्या नहीं बनाते हैं । मान मन्दिर में जितने भी सन्त एवं साध्वियाँ निवास करते हैं, इनमें से कोई श्रीबाबा का शिष्य नहीं है और न ही श्रीबाबा ने किसी को यहाँ बुलाया है । सभी लोग वहाँ स्वेच्छा से रहते हैं । इस समय यहाँ १०० से भी अधिक साध्वियाँ श्रीगह्वरवनवास करती हैं । इनको श्रीबाबा अनन्य रूप से श्रीराधामाधव की शरणागति, उन्हीं की अनन्य भक्ति सिखाते हैं । चाहे पुरुष हो अथवा स्त्री, श्रीबाबा तो सभी को प्रवृत्ति के स्थान पर शास्त्र सम्मत निवृत्ति धर्म ही सिखाते हैं । पुरुषों को भी यही सिखाते हैं कि वे अनन्य रूप से श्रीकृष्ण भक्ति को ग्रहण करें । विवाहित जीवन में बँधने के स्थान पर श्रीबाबा उनको भी अविवाहित रहकर भक्ति करने को कहते हैं । इसी तरह जितनी भी बालिकायें मान मन्दिर में रहती हैं, इनको भी श्रीबाबा ने निवृत्ति धर्म की ही शिक्षा दी है और सभी भक्ति शास्त्रों का भी यही सिद्धान्त है । मान मन्दिर की साध्वियों को श्रीबाबा धन, विषय भोग और यश की कामना से बचने की शिक्षा देते हैं । इसीलिए वे संध्या कालीन संकीर्तन आराधना में नित्य ही मीराजी के पद गाते हैं । मीराजी के प्रति श्रीबाबा की अनन्य श्रद्धा है । श्रीबाबा मान मन्दिर की साध्वियों को मीराजी के पद सिखाकर उनके जीवन चरित्र से प्रेरणा लेने के लिए कहते हैं । मीराजी ने लोकलाज की दुर्जर श्रृंखलाओं को तोड़कर एवं समस्त सांसारिक आसक्तियों को छोड़कर एकमात्र गिरधर गोपाल से ही अनन्य प्रेम किया । उनके जीवन में कितनी बाधायें, कितने ही कष्ट आये किन्तु उन्होंने गिरधर नागर की भक्ति से कोई समझौता नहीं किया । उनका प्रसिद्ध पद है – 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई ।' श्रीबाबा यही चाहते हैं कि मान मन्दिर की साध्वियाँ श्रीमीराजी के चरित्र का अनुकरण करते हुए आदर्श भक्त बनें । श्रीबाबा ने विरक्त साध्वियों का जैसा समूह बनाया है और जिस प्रकार से उन्हें आदर्श भक्त

बनाने के लिए सदा प्रेरित करते रहते हैं, ऐसा अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता । साधु-सन्तों के स्थानों में प्रायः स्त्रियों को मायारूपिणी समझकर उन्हें त्याज्य एवं नकारात्मक दृष्टि से देखा जाता है । स्त्रियों को अधिकतर विवाहित रहकर ही भक्ति करने की प्रेरणा दी जाती है । भारत की महत्वपूर्ण संस्थाओं द्वारा श्रीकृष्णभक्ति का सारी दुनिया में प्रचार किया गया है, उनके द्वारा सम्पूर्ण विश्व में कृष्णभक्ति के लिए मन्दिरों की स्थापना की गयी है किन्तु ये मन्दिर अथवा आश्रम केवल पुरुषों के लिए हैं । इनमें पुरुष भक्त अविवाहित रहकर आजीवन भक्ति का आचरण कर सकते हैं किन्तु बड़े ही दुःख का विषय है कि स्त्रियों को यहाँ भी विवाहित रहकर ही भक्ति करने को कहा जाता है । कुछ स्त्रियाँ अविवाहित रहकर, विषयों से पूर्णतया विरक्त होकर भक्ति करें, इसके लिए इन संस्थाओं के द्वारा कोई प्रयास नहीं किया गया है । इस सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्दजी का मत बड़ा ही उदार रहा है । उन्होंने अपनी पुस्तकों में अपने विचार व्यक्त किये हैं । वे कहते हैं कि मैं चाहता हूँ कि भारत में नारियों के लिए भी मठ-आश्रम बनाये जाएँ, जहाँ उनको ब्रह्मचारिणी, आजीवन विरक्त बनने की शिक्षा दी जाये, फिर ऐसी विरक्त देवियों के द्वारा संसार में अध्यात्म का, ईश्वर-भक्ति का प्रचार करवाया जाए । ऐसा होने से सम्पूर्ण विश्व की नारियों का उत्थान हो सकेगा । स्त्रियों को केवल भोग का, सन्तान-उत्पत्ति करने का साधन न बनाया जाए । श्रीबाबामहाराज ने यही कार्य किया है, कोई भी बालिका उनके पास आती है तो वे उसे अपना सम्पूर्ण जीवन कृष्णभक्ति हेतु समर्पित करने की प्रेरणा देते हैं । श्रीबाबामहाराज के मार्गदर्शन में यहाँ की साध्वियाँ दो घण्टे तक नृत्य-आराधना करती हैं । जिस प्रकार श्रीमीराजी अपने गिरधर गोपाल को रिझाने के लिए सदा ही नृत्य और गान किया करती थीं, उसी सिद्धान्त पर श्रीबाबा भी यहाँ की बालिकाओं को गान व नृत्य के माध्यम से श्रीराधा-माधव की आराधना सिखाते हैं, उन्हें गीता-भागवत-रामायण-भक्तमाल आदि भक्ति शास्त्रों की शिक्षा देते हैं । श्रीबाबामहाराज के द्वारा अनेकों बालिकाओं को भक्ति शास्त्रों का अध्ययन करवाकर कथा-व्यास बनाया गया है । उनके मार्गदर्शन में मानमन्दिर की साध्वियाँ श्रीमद्भागवत-व्यास बनकर देश-विदेश में निष्काम भाव से भक्ति का प्रचार-प्रसार कर रही हैं । भारत में भक्ति का प्रचार-प्रसार तो बहुत हो रहा है, भागवत की कथायें भी बहुत होती हैं किन्तु देखने में यही आता है कि यह सब प्रचार धन की कामना से युक्त होकर किया जाता है, कहीं भी निष्काम प्रचार नहीं होता है । श्रीबाबामहाराज की यह विशेषता है कि उन्होंने आज तक एक पैसे का भी स्पर्श नहीं किया । यहाँ की साध्वियों को भी उनका कड़ा आदेश है कि धन, भोग एवं कीर्ति की लिप्सा से पूर्णतया मुक्त रहकर प्रचार किया जाए । श्रीबाबा के सिद्धान्त का पूर्णतया पालन करते हुये मान मन्दिर की साध्वियाँ जहाँ भी कथा करती हैं, कहीं से भी वे धन की याचना नहीं करती हैं, निष्काम प्रचार ही उनकी एक ऐसी विशेषता है, जिसकी दुनिया में कोई समानता नहीं कर सकता है । शुद्ध भक्ति से अनभिज्ञ वर्तमानकाल के कुछ सन्तों ने श्रीबाबामहाराज के द्वारा बालिकाओं को कथा-व्यास बनाने का बड़ा विरोध किया किन्तु श्रीबाबा ने उनकी बिल्कुल भी परवाह नहीं की । मान मन्दिर की 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा' में श्रीराधामानबिहारीलाल के डोले के आगे संकीर्तन के साथ बालिकायें नृत्य करते हुए चलती हैं । इसका भी पहले कुछ आश्रमों में विरोध होता था, कुछ सन्त कहते थे कि हमारा आश्रम विरक्त सन्तों का आश्रम है, मान मन्दिर की यात्रा में बालिकायें नृत्य करती हैं, इससे हमारे स्थान की मर्यादा नष्ट होती है । श्रीबाबा ने उन सन्तों से स्पष्ट कह दिया कि आप लोगों का स्थान विरक्तों का है, यह आपकी मर्यादा है तो अगले वर्ष हमारी यात्रा आपके स्थान में नहीं रुकेगी क्योंकि हमारे स्थान में कन्यायें ठाकुरजी के डोले के आगे नृत्य करती हैं, यह हमारे स्थान की मर्यादा है और हम लोग कभी भी अपनी इस मर्यादा को नहीं तोड़ सकते हैं । जो बालिकायें ठाकुरजी के डोले के आगे नृत्य करती हैं, हम उन्हें श्रीजी का स्वरूप मानते हैं, साधारण लड़की नहीं समझते हैं । श्रीबाबा के इस स्पष्ट मत के आगे उन सन्तों को झुकना पड़ा और उन्होंने श्रीबाबा से कहा कि आप हमारे स्थान में अपनी ब्रजयात्रा को लाइए तथा इन देवियों को खूब नृत्य करने दिया जाए, हमें कोई आपत्ति नहीं है ।

मेरे पास बहुत से लोग आते हैं और कहते हैं कि हमारा कोई गुरु नहीं है, हमें गुरु मन्त्र दे दीजिये । इसकी कोई आवश्यकता नहीं है । राधा नाम रटो, यह सारे मन्त्रों का सार है । न किसी गुरु की आवश्यकता है और न ही मन्त्र की ।

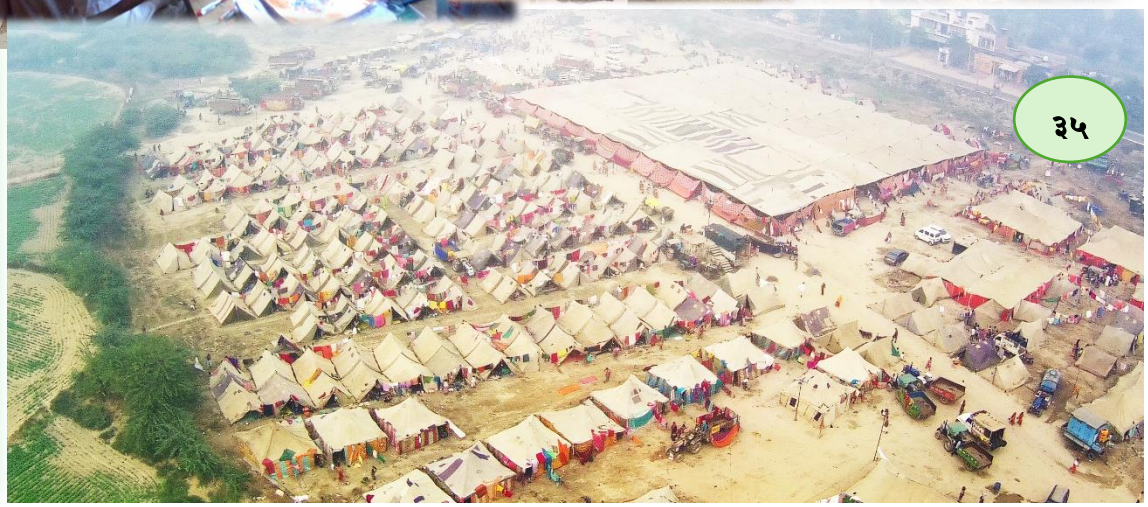
३५

श्री मानमंदिर

प्रस्तावित पुनरुद्धार रेखांकित चित्र

'मान मन्दिर' लीलास्थल श्रीराधाकृष्ण की लीला स्थलियों में सबसे प्रमुख है इस अति विलक्षण लीलास्थली के पुनुरुद्धार कार्य में जुड कर 'धाम-सेवा' का दुर्लभ लाभ प्राप्त करें

मान मंदिर लीला स्थल श्रीराधाकृष्ण की लीला स्थलियों में सबसे प्रमुख है
इस अति विलक्षण लीला स्थली के पुरुद्धार कार्य में जुड़ कर धाम सेवा का दुर्लभ लाभ प्राप्त करें

सेवा राशि देकर रसीद अवश्य प्राप्त करें।

ACCOUNT NAME
SHRI MAAN BIHARI
LAL MANDIR SEVA

ACCOUNT NUMBER: **59109927338666**
IFSC CODE: **HDFC0000268**
BANK: **HDFC BANK LTD**
BRANCH: **BSA COLLEGE, MATHURA**
संपर्क :9927338666
www.maanmandir.org

आपकी सेवा राशि आयकर अधिनियम 80G/12A के अंतर्गत आयकर छूट के लिए मान्य है
रजिस्ट्रेशन नंबर AADTS716DEF2021401

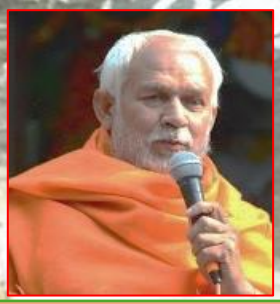

कार्यकारी अध्यक्ष -
राधाकान्त शास्त्री
मोबा. - 9927338666

ACCOUNT NAME
SHRI MAAN BIHARI
LAL MANDIR SEVA
ACCOUNT NUMBER: 59109927338666
IFSC CODE: HDFC0000268
BANK: HDFC BANK LTD
BRANCH: BSA COLLEGE, MATHURA

मान मंदिर लीला स्थल श्रीराधाकृष्ण की लीला स्थलियों में सबसे प्रमुख है
इस अति विलक्षण लीला स्थली के पुरुद्धार कार्य में जुड़ कर धाम सेवा का दुर्लभ लाभ प्राप्त करें

श्रीमानमंदिर सेवा संस्थान ट्रस्ट, गह्वरवन, बरसाना (मथुरा)
www.maanmandir.org; संपर्क :9927338666

QR कोड

RNI REFERENCE NO. 1313397- REGISTRATION NO. UP BIL-2017/72945-TITLE CODE UP BIL-04953 POSTAL REGD.NO. 093/2024-2026 श्री मान मन्दिर सेवा संस्थान के लिए प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक राधाकांत शास्त्री द्वारा 'गुप्ता प्रिन्टिंग प्रेस, खरौट गेट, कोसीकलाँ, मथुरा. उत्तरप्रदेश' से मुद्रित एवं मान मन्दिर सेवा संस्थान, गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.) से प्रकाशित **[AGRA/WPP-12/2024-2026 AT 31.12.26]**